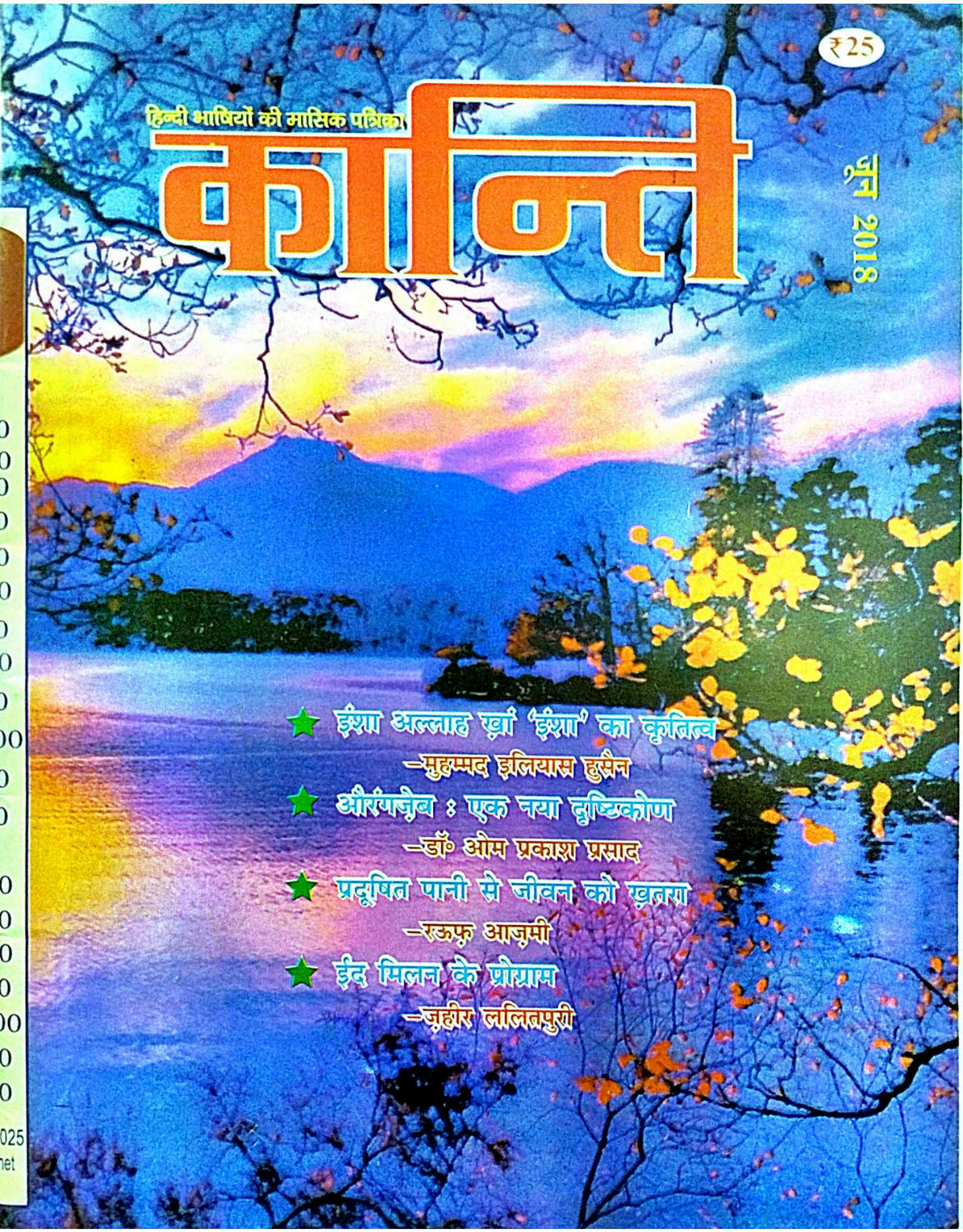
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
क्रान्ति
जून 2018
इंशा अल्लाह ख़ां 'इंशा' का कृतित्व
–मुहम्मद इलियास हुसैन
औरंगज़ेब : एक नया दृष्टिकोण
–डॉ॰ ओम प्रकाश प्रसाद
प्रदूषित पानी से जीवन को ख़तरा
–रऊफ़ आज़मी
ईद मिलन के प्रोग्राम
–ज़हीर ललितपुरी



With Best Compliments from :

MAKING THE [EXTRA] ORDINARY

LIS (INDIA) CONSTRUCTION CO. PVT. LTD.

BUILDERS & DEVELOPERS

Regd. office: A/2, Swati Apartment, Juhu Lane, Andheri (W), Mumbai - 400 058
Ph.: 2625 5702-34 Fax: 262 88474 Email: lis.co.in.@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 27 अंक 12 जून 2018

(ऐ नबी) इनसे कहो, मुझे आदेश दिया गया है कि दीन (धर्म) को अल्लाह के लिए ख़ालिस (विशुद्ध) करके उसकी बन्दगी करूं और मुझे आदेश दिया गया है कि सबसे पहले मैं ख़ुद मुस्लिम आज्ञाकारी बनूं। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

नूर पर नूर

सोना नाम का एक नाई था,
वह लोगों की हजामत बनाता,
उनके सिर की मैल दूर करता ।
एक दिन वह किसी ग्राहक की हजामत बना रहा था,
उसके सिर की मैल दूर कर रहा था,
कि यकायकी उसे एक आवाज़ सुनायी दी,
ओ रे सोना !
तू सबके सिर की मैल साफ़ करता है,
क्या कभी तूने अपने सिर की मैल के बारे में सोचा ?
सिर यानी बुद्धि का विकार ?
उसने इधर-उधर देखा,
कोई नहीं था,
यह उसके अन्तर की आवाज़ थी,
उसी दिन से वह सोचने लगा,
संकल्प भी किया,
अपने भीतर के विकार के दूर करने का ।
सोना का चिंतन गहराता गया,
फिर उसने सुना,
कोई सद्बुद्धि रखने वाला,
सुशील व्यक्ति ऐलान कर रहा था,
हम सबके पैदा करने वाले का फ़रमान है कि
अपने भीतर को भी, अपने बाहर को भी,
हर प्रकार के विकार और गन्दगी से पाक करो,
यह आवाज़ मेल खा रही थी,
उसकी अन्तरात्मा की आवाज़ से,
उसका मन खिल उठा,
वह जगमगा उठा
अंत: ज्योति से भी
और ईश-ज्योति से भी
उसके बाहर भी नूर था, भीतर भी नूर
नूर पर नूर !

● **डॉ० कौसर यज़दानी नदवी**



कहां क्या है ?

नूर पर नूर	–डॉ॰ कौसर यज़दानी नदवी	3
क़ुरआन ज्योति		5
कमीज़ और आस्तीन की लम्बाई (हदीस मंजरी)		6
बुरा जो देखन मैं चला... (संपादकीय)		7
लव जिहाद की वास्तविकता (आपके पत्र)		9
इस्लाम इन्सानियत का धर्म (आस्था)	–हाफ़िज़ मुहम्मद इदरीस	11
ईद मिलन के प्रोग्राम (सद्भावना)	–ज़हीर ललितपुरी	13
पुरुष ही संरक्षक क्यों ? (विचारणीय)	–बुशरा सादिक़ा	17
पहली शहीद सहाबिया (नेकी के सिपाही)	–संपादन प्रभाग	23
इंशा अल्लाह ख़ां 'इंशा' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (विशेष आयोजन)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	26-27
पछतावा (कहानी)	–इब्ने फ़रीद	35
औरंगज़ेब आलमगीर : एक नया दृष्टिकोण (अतीत के झरोखे से)	–डॉ॰ ओम प्रकाश प्रसाद	39
गीत	–चन्द्रसेन विराट	40
संस्कार (लघुकथा)	–अशोक यादव	42
साक्षात्कार में शारीरिक हाव-भाव (कैरियर)	–ए॰ के॰ मिश्रा	45
प्रदूषित पानी से मानव-जीवन को ख़तरा (पर्यावरण)	–रऊफ़ आज़मी	47
लंबी टांगों वाला पक्षी शुतुरमुर्ग़ (बालवीथी)		49

कुरआन ज्योति

(60) जो लोग अल्लाह पर यह झूठ गढ़ते हैं उनका क्या गुमान है कि क़ियामत के दिन उनसे क्या मामला होगा ? अल्लाह तो लोगों पर दया-दृष्टि रखता है, मगर अधिकतर लोग ऐसे हैं जो कृतज्ञता नहीं दिखाते ।[63] (61) ऐ नबी ! तुम जिस हाल में भी होते हो और क़ुरआन में से जो कुछ भी सुनाते हो, और लोगो, तुम भी जो कुछ करते हो, उस सबके दौरान में हम तुमको देखते रहते हैं । कोई कण-भर चीज़ आसमान और ज़मीन में ऐसी नहीं है, न छोटी, न बड़ी, जो तेरे रब की नज़र से छिपी हो और एक साफ़ दफ़्तर में अंकित न हो ।[64]

–क़ुरआन, 10 : 60,61

63. अर्थात यह तो स्वामी की बहुत बड़ी कृपा है कि वह नौकर को स्वयं बताता है कि मेरे घर में और मेरे माल में और स्वयं अपने बारे में तू कौन-सी कार्य-प्रणाली अपनाएगा तो मेरी प्रसन्ता और पुरस्कार और उन्नति से सम्पन्न होगा और किस प्रणाली के अपनाने से मेरे प्रकोप और दंड और पतन का कारण बनेगा, मगर बहुत-से मूर्ख नौकर ऐसे हैं जो कृपा पर आभार व्यक्त नहीं करते, मानो उनके नज़दीक होना यह चाहिए था कि स्वामी उनको अपने घर में लाकर छोड़ देता और सब माल उनके अधिकार में दे देने के बाद छिपकर देखता रहता कि कौन-सा नौकर क्या करता है, फिर जो भी उसकी मर्ज़ी के विरुद्ध, जिसका किसी नौकर को ज्ञान नहीं, कोई काम करता तो उसे वह सज़ा दे डालता, हालांकि अगर स्वामी ने अपने नौकरों को इतनी कड़ी परीक्षा में डाला होता तो उनमें से किसी का भी सज़ा से बच जाना संभव न था ।

64. यहां इस बात का उल्लेख करने से अभिप्रेत नबी को तसल्ली देना और नबी के विरोधियों को सचेत करना है । एक ओर नबी से कहा जा रहा है कि सत्य के सन्देश का प्रचार और अल्लाह के बन्दों के सुधार में जिस तन्मयता और दृढ़ता और जिस धैर्य और सहनशीलता से तुम काम कर रहे हो, वह हमारी दृष्टि में है । ऐसा नहीं है कि इस ख़तरा भरे काम पर लगाकर हमने तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ दिया हो, जो कुछ तुम कर रहे हो वह भी हम देख रहे हैं और जो कुछ तुम्हारे साथ हो रहा है उससे भी हम बेख़बर नहीं हैं ।

दूसरी ओर नबी के विरोधियों को सचेत किया जा रहा है कि सत्य के एक आवाहक और इन्सानों के हितैषी के सुधार प्रयत्नों में रोड़े अटकाकर तुम कहीं यह न समझ लेना कि कोई तुम्हारी इन हरकतों को देखने वाला नहीं है और कभी तुम्हारे इन करतूतों की पूछ-गछ न होगी । ख़बरदार रहो, वह सब कुछ जो तुम कर रहे हो, अल्लाह के दफ़्तर में लिखा जा रहा है ।



कमीज़ और आस्तीन की लंबाई, तहबंद और इमामह (पगड़ी) की हद

इनमें से किसी चीज़ को गर्व के कारण लटकाना वर्जित है, बिना गर्व के भी अनुचित है।

● हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति घमंड के कारण अपना कपड़ा लटकाएगा, तो क़ियामत के दिन अल्लाह उसकी ओर नहीं देखेगा।" इस पर हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मेरा तहबंद नीचे लटक जाता है। यह और बात है कि मैं इसका विशेष रूप से ध्यान रखूं। इस पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनसे कहा : "तुम उन लोगों में से नहीं हो जो घमंड से ऐसा करते हैं।" –बुख़ारी

मुस्लिम ने भी इसके कुछ अंशों की रिवायत की है।

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "क़ियामत के दिन अल्लाह उस व्यक्ति की ओर नहीं देखेगा जो गर्व से अपना तहबंद घसीटता है।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू ज़र (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "तीन व्यक्ति ऐसे हैं कि क़ियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें निखारेगा उनके लिए दुखदायिनी यातना है।" अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने यह बात तीन बार दोहरायी। हज़रत अबू ज़र (रज़ि॰) ने कहा : वे लोग असफल होकर रह गये और घाटे में पड़े। ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), वे कौन हैं ? आपने कहा : 'गर्व से अपने कपड़े लटकाने वाला, एहसान जताने वाला और झूठी क़समों से अपने माल को बेचने वाला।'–बुख़ारी

मुस्लिम ही की एक रिवायत में ये शब्द आये हैं : "अपने तहबंद को लटकाने वाला।"

● हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) से रिवायत है। वे कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पास से गुज़रा। मेरा तहबंद लटका हुआ था। आपने कहा : "ऐ अब्दुल्लाह, अपना तहबंद ऊंचा करो।" मैंने उसे ऊंचा किया। आपने फिर कहा : "और ऊंचा करो।" मैंने और उठा लिया। इसके बाद मैं बराबर ऊंचा रखने की कोशिश करता रहा। कुछ लोगों ने कहा : इसे कहां तक रहना चाहिए ? कहा : "आधी पिंडली तक।" –मुस्लिम

● हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिस व्यक्ति ने गर्व से अपना कपड़ा घसीटा अल्लाह क़ियामत के दिन उसकी ओर नहीं देखेगा।" हज़रत उम्म सलमह (रज़ि॰) ने कहा : औरतें अपने दामन के साथ क्या करें ? आपने कहा : "एक बालिश्त (बित्ता) बढ़ा लें।" उन्होंने कहा : इससे यदि उनके पांव खुले रहें ? आपने कहा : "फिर हाथ भर बढ़ा लें। इससे अधिक नहीं।"

–अबू दाऊद, तिरमिज़ी। तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है। ('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

बुरा जो देखन मैं चला...

यह अच्छा है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति दूसरों को देखने से पहले अपने गरेबां में झांके । यह एक स्वस्थ परिपाटी है जिसका चलन यदि आम जो जाए तो अनेक ग़लतफ़हमियां स्वत: दूर हो जाएंगी और विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच पनप रहे वैमनस्य, मनमुटाव, घृणा को दूर करने में भी सहायता मिलेगी । कबीरदास जी ने कहा है–

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय
जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय ।।

अर्थात, हम क्यों व्यर्थ में किसी दूसरे में दोष ढूंढ़ने लगते हैं, जबकि हमें अपने अन्दर झांकना चाहिए । यदि कहीं कोई कमी है, जो वह मुझमें है । वास्तव में आत्म निरीक्षण, आत्म विश्लेषण और आत्मावलोकन का जीवन में महत्व है ।

अक्सर देखा गया है कि निहित राजनीतिक या अन्य स्वार्थों की पूर्ति के लिए मुस्लिम दुश्मनी का वातावरण तैयार किया जाता है । कभी मृतप्राय और निराधार मुद्दों को उभारा जाता है और हज़ार-डेढ़ हज़ार वर्ष बीती हुई बातों को उभारने और कुरेदने की कोशिश की जाती है । मान लीजिए, यदि सभी भारतीय मुसलमान तथाकथित आरोपों के प्रति गंभीर भी हो जाएं, तो इससे क्या मसला हल होने वाला है ? यदि मुसलमान भी हिन्दू धर्म के देवी-देवताओं, आराध्यों एवं महापुरुषों पर इसी प्रकार कीचड़ उछालने लगें तो क्या इससे सांप्रदायिक सौहार्द में अभिवृद्धि होगी ? क्या मीडिया की भूमिका अब यही रह गयी है कि वे नकारात्मक मुद्दों को उछालकर विभिन्न समुदाय के लोगों में मनमुटाव पैदा करें ? द्वितीय विश्वयुद्ध की वेला में इंग्लैंड के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने अपने प्रतिद्वंद्वी एडोल्फ हिटलर को संबोधित करते हुए कहा था–"You do your worst, we will do our best." अर्थात, तुम बुराई की जिस सीमा तक जा सकते हो, जाओ; पर हम तो वही करेंगे जो सबसे उत्तम होगा ।''

क़ुरआन अपने पाठकों को गंभीर अध्ययन तथा चिंतन-मनन के लिए प्रेरित करता है । समीक्षा करने तथा उस पर एतिराज़ करने वालों का सटीक उत्तर देता है । ऐसे प्रश्नों एवं उत्तरों से क़ुरआन भरा पड़ा है । क़ुरआन स्वयं कहता है : ''तो क्या ये लोग 'क़ुरआन' में विचार, चिंतन-मनन नहीं करते या (इनके) दिलों पर ताले पड़े हुए हैं ?'' (27:24)

''धर्म के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है ।'' (2:256)

''तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म और मेरे लिए मेरा धर्म श्रेयस्कर है ।'' ''धर्म के मामले में अल्लाह ने तुम पर कोई तंगी नहीं रखी ।'' (22:78)

किसी भी बातचीत, आलेख या ग्रंथ में कुछ परिस्थितिजन्य चीज़ों का वर्णन होता है । यदि उन्हें संदर्भों से काटकर प्रस्तुत किया जाए तो बात का बतंगड़ बन जाता है । प्रत्येक धर्म अपने अनुयायियों के लिए कुछ न कुछ सिद्धांत अवश्य निर्धारित करता है जिनका पालन करना उनके लिए अनिवार्य होता है । उसकी अनदेखी या अवहेलना करने वालों के लिए विशेष परिस्थितियों में दंड का भी प्रावधान होता है । इस्लाम इसका अपवाद नहीं है । विधर्मियों के लिए वेद, महाभारत, मनुस्मृति आदि ग्रंथों में जो दंड प्रावधान हैं, उनका तुलनात्मक अध्ययन ज्ञानवर्धक होगा । संसार के सभी धर्मों में इस्लाम ज्ञान का सबसे बड़ा प्रेरक एवं पोषक है । इस्लाम का आधार ही ज्ञान पर है । आरंभिक रूप में अरबों का और तत्पश्चात विश्व का अज्ञान इस्लाम ही ने दूर किया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने तो यहां तक कहा है : ''प्रत्येक मुसलमान (मर्द-औरत) के लिए इल्म सीखना अनिवार्य है ।'' ''गोद से लेकर क़ब्र में जाने तक ज्ञान सीखते रहो ।'' क़ुरआन में कहा गया : ''क्या ज्ञानी और अज्ञानी एक जैसे हो सकते हैं ।'' (39:9) इसी प्रकार अनेक स्थानों पर इल्म और ज्ञान की महिमा का वर्णन किया गया है । अब यदि कोई ज्ञान की अधूरी कल्पना लेकर एक सीमित दायरे में ही ज्ञान अर्जित करे-कराये तो इस्लाम इसका ज़िम्मेदार नहीं है । यह कोई ढकी-छुपी बात नहीं है कि यूरोप के लोग मुसलमानों के मदरसों, यूनीवर्सिटियों में पढ़ने के लिए जाते थे और एक लंबे समय तक पश्चिमी यूनीवर्सिटियों में मुस्लिम विद्वानों की लिखी पुस्तकें उनके पाठ्यक्रम में शामिल रहीं तथा अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों का आधार भी बनीं । कालांतर में पश्चिमी भाषाओं में उनके अनुवाद भी हुए ।

'कान्ति' मासिक का आगामी विशेषांक

पश्चिमी जगत और मुसलमान

मुसलमानों ने पश्चिमी जगत को किस रूप में देखा, समझा और जाना ? इस विषय पर बहुत ही कम साहित्य उपलब्ध है । जबकि पश्चिमी जगत के लोगों के मुसलमानों के साथ संपर्क पर बहुतायत चीज़ें उपलब्ध हैं । ब्रिटिश मूल के अमेरिकी इतिहासकार एवं विचारक बर्नार्ड लुइस (BERNARD LEWIS) ने इस विषय पर विस्तृत अध्ययन किया है और ''द मुस्लिम डिस्कवरी ऑफ़ यूरोप'' (The Muslim Discovery of Europe) नामक पुस्तक लिखी है, जो काफ़ी प्रसिद्ध हुई । इसकी उपादेयता और महत्व के मद्देनज़र 'कान्ति' (मासिक) के प्रस्तुत विशेषांक में इस पुस्तक के महत्वपूर्ण अंशों को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । साथ ही पेश की गयी हैं इस विषय पर कुछ अन्य सामग्रियां ।

पृष्ठ लगभग : 120, मूल्य : 60 रुपये

संपादक, 'कान्ति' (मा०), दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल
इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
ई-मेल : **editorkanti@yahoo.com**

लव जिहाद की वास्तविकता

कुछ वर्षों से मीडिया में 'लव जिहाद' की बड़ी चर्चा है । 2009 ई॰ में केरल और पश्चिम बंगाल में कुछ हिन्दू लड़कियों द्वारा मुस्लिम लड़कों के प्रेम प्रसंग में पड़कर इस्लाम धर्म अपनाने की घटनाओं के कारण यह शब्दावली चर्चा में आयी । इन घटनाओं को आधार बनाकर असामाजिक तत्वों द्वारा देश भर में मुस्लिम समाज को निशाना बनाया जाने लगा । हालांकि हमारे देश में न तो प्रेम करना असंवैधानिक है और न ही धर्म बदलना ।

इसे लव जिहाद का नाम देकर यह बताने की कोशिश की गयी कि मुस्लिम युवा हिन्दू लड़कियों को अपने प्रेम जाल में फंसा कर हिन्दू समाज के ख़िलाफ़ जिहाद छेड़े हुए हैं । यह पूरी तरह राजनीतिक मुद्दा है और एक विशेष वर्ग राजनीतिक लाभ उठाने के लिए इसके आधार पर देश को बांटने की कोशिश कर रहा है ।

लव जिहाद में जिस अर्थ में प्रेम का उल्लेख है, अगर इस्लामी दृष्टिकोण से देखा जाए तो वह प्रेम तो क्या, सभ्यता और शिष्टाचार के भी विरुद्ध है, बल्कि बड़ा अपराधा है, ऐसा अपराध जिसके लिए इस्लामी क़ानूनों में मौत तक की सज़ा का प्रावधान है । इस्लाम तो कुछ अत्यंत सगे रिश्तों को छोड़कर किसी वयस्क महिला और पुरुष को मिलने तक की अनुमति नहीं देता ।

और जहां तक धर्म परिवर्तन का सवाल है तो इस्लाम ज़बरदस्ती स्वीकार किये गये धर्म को मान्यता ही नहीं देता । कुरआन की स्पष्ट आयत है कि, "धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं" (2:226)। ईश्वर के मार्ग को स्वीकार करना या उसका इन्कार करना किसी व्यक्ति का

"आख़िर उस व्यक्ति से ज़्यादा बहका हुआ इन्सान कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो 'क़ियामत' तक उसे उत्तर नहीं दे सकते, बल्कि इससे भी बेख़बर है कि पुकारने वाले उनको पुकार रहे हैं, और जब सभी इन्सान इकट्ठा किये जाएंगे उस समय वे अपने पुकारने वालों के दुश्मन और उनकी उपासनाओं के इन्कार करने वाले होंगे ।"

(क़ुरआन, 46:5-6)

★★★★★★★

A Well Wisher

GANGAPUR CITY (RAJ.)

निजी मामला है, पूरी तरह निजी । उसमें किसी को हस्तक्षेप का अधिकार नहीं है । हां इस्लाम यह शिक्षा ज़रूर देता है कि जो लोग ईश्वर के सीधे मार्ग से अवगत हैं, वे उन लोगों को इसकी शिक्षा दें जो इससे अवगत नहीं हैं ।

अगर ज़ोर ज़बरदस्ती से या बहला-फुसला कर इस्लाम धर्म स्वीकार कराने की अनुमति होती तो इस देश पर मुसलमानों ने लगभग आठ सौ वर्षों का शासन किया है । मुस्लिम शासकों और मुस्लिम समाज के पास इसके बहुत अवसर थे कि वे यहां के निवासियों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर करें । लेकिन स्पष्ट है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया, जिसके नतीजे में आज यहां मुसलमान अल्पसंख्यक हैं ।

जहां तक प्रेम विवाह का संबंध है, तो यह धार्मिक नहीं एक सामाजिक मुद्दा है । आज के युग में जब महिला सशक्तिकरण के नाम पर महिलाओं पर घर संभालने की ज़िम्मेदारी के साथ-साथ धनोपार्जन का बोझ भी डाल दिया गया है, महिलाओं को पुरुषों के साथ काम करना पड़ता है ।

कार्य स्थल पर साथ-साथ काम करते हुए महिला पुरुष का एक दूसरे के क़रीब आ जाना अस्वाभाविक नहीं है । आज के सभ्य नागरिक जीवन में धर्म का स्थान बहुत सीमित है, अत: ऐसे साथी धर्म की परवाह भी नहीं करते । प्रेम प्रसंग के कुछ मामले अलग-अलग धार्मिक पृष्ठभूमि के लड़के-लड़कियों के बीच भी हो ही जाते हैं । फिर स्वार्थी क़िस्म के लोग उसे एक विशेष रंग देकर प्रचारित करने लगते हैं ।

जस्टिस अब्दुर्रहीम अंसारी

हाजीपुर, बिहार

युवा शक्ति के सदुपयोग की आवश्यकता

प्रतिवर्ष सामान्यत: अप्रैल में विभिन्न प्रदेशों के माध्यमिक बोर्डों तथा विश्वविद्यालयों की सालाना परीक्षाएं समाप्त हो जाया करती हैं और तत्पश्चात दो मास का ग्रीष्मावकाश होता है । ज़्यादातर विद्यार्थियों का यह ग्रीष्मावकाश खेल-कूद, वैवाहिक निमंत्रण आदि के कार्यों में व्यतीत होता है ।

होना तो यह चाहिए कि इस शैक्षणिक ग्रीष्मावकाश में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम संचालित कर युवा शक्ति का रचनात्मक कामों में अधिकाधिक सदुपयोग किया जाए । इस कालावधि में शिक्षण संस्थाओं में तमिल, तेलुगू, उड़िया, उर्दू, गुजराती, मराठी आदि विभिन्न भाषाओं को सिखाने की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि देश में निवास करने वाले छात्रगण धर्म, ज्ञान-विज्ञान की बातें समझ सकें । इसके अलावा इस दौरान गांवों और शहरों में स्वास्थ्य जागरूकता, प्रौढ़ साक्षरता, निरक्षरता निवारण, नशा उन्मूलन, सफ़ाई वग़ैरह के कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं ताकि लोग सफ़ाई, आदि से संबंधित समस्याओं के समाधान के मामलों में सरकार और स्वायत्तशासी निकायों के भरोसे न रहें और खुद प्रयास तथा परिश्रम करके गली-गांव की छोटी-मोटी समस्याओं का हल करना सीखें । वे जम्मू-कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, गोवा, तमिलनाडु, कन्या कुमारी, कोडाई कनाल वग़ैरह स्थानों तथा पर्यटन स्थलों की सैर कर सकते हैं और इस प्रकार वे भारत भ्रमण के साथ ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग सामान्य ज्ञान वृद्धि में कर सकते हैं ।

हमारे देश में ग्रीष्मावकाश में विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार के द्वैमासिक कार्यक्रम संचालित करने वाली संस्थाओं का अभाव हैं और जो संस्थाएं हैं भी, उनमें इस प्रकार के कार्यों को चलाने की रुचि नहीं है । फलस्वरूप योजनाओं तथा कार्यक्रमों के अभाव में प्रतिवर्ष युवाशक्ति अप्रयुक्त रह जाती है । लंबी छुट्टियों में युवा शक्ति का रचनात्मक इस्तेमाल विभिन्न कार्यों में करके देश की तरक़्क़ी की रफ़्तार बढ़ायी जा सकती है ।

विद्या प्रकाश

अचलाघाट मार्ग, सिपाह, जौनपुर (उ०प्र०)

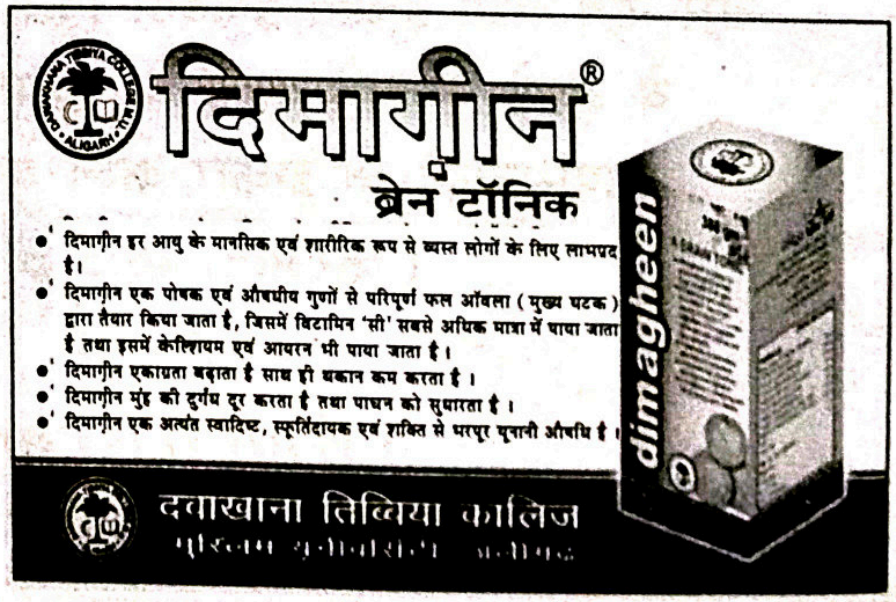

इस्लाम : इन्सानियत का धर्म

■ हाफ़िज़ मुहम्मद इदरीस

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पहले पैग़म्बरों और नबियों को अल्लाह तआला ने ख़ास वक़्त और विशिष्ट क़ौम के लिए दुनिया में भेजा जबकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को समस्त मानव-जाति के पथ-प्रदर्शक, मार्गदर्शक और क़यामत तक के लिए नबी बनाकर भेजा । आप (सल्ल०) ने अल्लाह तआला का पैग़ाम पूरी इन्सानियत तक पहुंचाया, यहां तक कि आप (सल्ल०) ने उस वक़्त के शासकों तक को भी अल्लाह तआला का सत्य संदेश पहुंचा दिया । आप (सल्ल०) के मुबारक दौर में रोम और ईरान को महाशक्ति समझा जाता था । आप (सल्ल०) ने उनके शासकों को भी सत्य का पैग़ाम पहुंचाया ।

रूमी सल्तनत का बादशाह क़ैसर कहलाता था । आप (सल्ल०) के पवित्र दौर में उस सल्तनत का राजा हिरक़्ल (Hercules) था । उसने रूमी फ़ौजों की लगातार पराजयों के बाद ईरानियों के मुक़ाबले के लिए ख़ुद रूमी सेनाओं की कमान संभालकर बहुत ही शानदार ऐतिहासिक विजय प्राप्त की । उसे बाजन्तीनी रियासत के बादशाहों में बहुत ही मान-सम्मान और इज़्ज़त की नज़र से देखा जाता है । उसका राज्याभिषेक 610 ईसवी में हुआ और 641 ईसवी में अपनी मृत्यु तक यह सत्तासीन रहा । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मुबारक पत्र का मूल लेख जो ऐतिहासिक किताबों में नक़ल किया गया है, इस तरह है–

''मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल की तरफ़ से, रोम के बादशाह हिरक़्ल के नाम । इस्लाम उस व्यक्ति पर जो हिदायत की पैरवी करे, मैं तुझे इस्लाम की दावत देता हूं , इस्लाम अपना ले, सलामत रहेगा, तुझे अल्लाह तआला दोहरा प्रतिफ देगा और अगर तू आज्ञा का उल्लंघन करेगा, तो तुम्हारी सारी प्रजा के इस्लाम न लाने का गुनाह तुझ पर होगा । ऐ अहले किताब ! जो बात हमारे और तुम्हारे बीच एक समान है उसकी तरफ़ आओ । वह यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करें और उसके साथ किसी भी चीज़ को साझी न बनाएं और हममें से कोई किसी को अल्लाह के सिवा अपना पालनहार न बनाए । अगर यह बात न मानें, तो आप कह दीजिए कि तुम गवाह रहो हम (अल्लाह के) फ़रमाबरदार हैं ।''

(सीरत ख़ैरुलअनाम : पृष्ठ-302)

क़ैसर के पास आप (सल्ल०) का पत्र लेकर जाने वाले सहाबी दिहया बिन ख़लीफ़ा अल-कल्बी (रज़ि०) थे । आप पत्र लेकर चले तो आपने नबी करीम (सल्ल०) से निवेदन किया कि क़ैसरे रूम के बारे में प्रसिद्ध है कि वह प्रत्यक्षरूप से पत्र प्राप्त करने के बजाय अपने गवर्नरों के ज़रिए प्राप्त करता है । दूसरे यह कि बिना मुहर के वह किसी पत्र को ध्यान देने योग्य नहीं समझता । नबी करीम (सल्ल०) ने सारे शासकों के नाम अपने पत्रों पर मुहर लगाने के लिए अपनी अंगूठी की पुश्त पर 'मुहम्मद रसूलुल्लाह' के शब्द अंकित करवाए । ''मुहम्मद रसूलुल्लाह'' हर पत्र पर आप (सल्ल०) की मुहर लगायी गयी । यह पत्र बैतुल मक़दिस में क़ैसरे रोम के दरबार में पेश किया गया, क्योंकि उस वक़्त क़ैसरे रूम यरुशलम में आया हुआ था । बसरा के हाकिम और क़ैसरे रोम के गवर्नर को सूचित करके पत्र पेश किया गया, मगर दिहया अल-कल्बी (रज़ि०) ख़ुद वहां पहुंचकर यह पत्र हिरक़्ल के हवाले किया था ।

देश के बादशाहों के नाम ये पत्र मुहर्रम 7 हिजरी अर्थात 628-629 ईसवी में लिखे गये थे । क़ैसर ने पत्र को अदब और शिष्टाचार के साथ सुरक्षित रखते हुए बहुत इज़्ज़त व सम्मान के साथ प्राप्त किया और उसका लेख पढ़वाया । पत्र में लिखे गये लेख से परिचित होने के बाद उसने अपने दरबारियों से पूछा कि क्या इन दिनों अरब प्राय:द्वीप से कोई व्यापारी यरुशलम आया हुआ है, तो उसे बताया गया कि हां आया हुआ है ।

संयोग से उन दिनों मक्का के सरदार अबू सुफ़यान व्यापारियों के साथ शाम (सीरिया) आए हुए थे । उन्हें बैतुल मक़दिस पहुंचने के बाद हिरक़्ल के दरबार में पेश

किया गया । क़ैसर ने उनके साथ वाले व्यापारियों से कहा कि मैं अबू सुफ़यान से सवाल करूंगा, अगर वह कोई जवाब ग़लत दे, तो मुझे बता देना । अबू सुफ़यान उन दिनों नबी करीम (सल्ल॰) का जानी दुश्मन था । उसका बयान है कि अगर मुझे यह डर न होता कि मेरे साथ वाले मेरा झूठ प्रकट कर देंगे, तो मैं बहुत-सी बातें ग़लत बताता, मगर उस वक़्त क़ैसर के सामने मुझे सच-सच ही कहना पड़ा ।

क़ैसर–''मुहम्मद (सल्ल॰) का ख़ानदान और नसब कैसा है ?''

अबू सुफ़यान–''शरीफ़ व अज़ीम ।'' यह जवाब सुनकर हिरक़्ल ने कहा–''सच है । नबी शरीफ़ घराने के होते हैं, ताकि उनके अनुसरण में किसी को कोई बाधा न पहुंचे ।''

क़ैसर–''मुहम्मद (सल्ल॰) से पहले भी किसी ने अरब में या क़ुरैश में नबी होने का दावा किया है ।''

अबू सुफ़यान–''नहीं ।'' यह जवाब सुनकर हिरक़्ल ने कहा–''अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि अपने से पहले की नक़्क़ाली (अनुसरण) करता है ।''

क़ैसर–''नबी होने के दावे से पहले क्या यह व्यक्ति झूठ बोला करता था या उस पर झूठ बोलने का कभी आरोप लगा ।''

अबू सुफ़यान–''नहीं ।'' हिरक़्ल इस जवाब पर कहा–''यह नहीं हो सकता कि जिस व्यक्ति ने लोगों पर झूठ न बोला, वह ख़ुदा पर झूठ बांधे ।''

क़ैसर–''उसके बाप-दादा में से कोई व्यक्ति बादशाह भी हुआ है ?''

अबू सुफ़यान–''नहीं ।'' हिरक़्ल इस जवाब पर कहा–''अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि नुबूवत के बहाने से बाप-दादा की खोयी हुई पिछली सल्तनत प्राप्त करना चाहता है ।''

क़ैसर–''मुहम्मद (सल्ल॰) के मानने वालों में ग़रीब व निर्धन लोग ज़्यादा हैं या सरदार व धनी लोग ?''

अबू सुफ़यान–''निर्धन व ग़रीब लोग ।'' हिरक़्ल इस जवाब पर कहा–''हर एक नबी के पहले मानने वाले निर्धन व ग़रीब लोग ही होते रहे हैं ।''

क़ैसर–''उन लोगों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है या कम हो रही है ।''

अबू सुफ़यान–''बढ़ रही है ।'' हिरक़्ल ने कहा–''ईमान की यही विशेषता है कि धीरे-धीरे बढ़ता है और अंतिम सीमा तक पहुंच जाता है ।''

क़ैसर–''कोई व्यक्ति उसके धर्म से बेजार होकर उससे फिर भी जाता है ।''

अबू सुफ़यान–''नहीं ।'' हिरक़्ल ने कहा–''ईमान की लज़्ज़त की यही तासीर है कि जब दिल में बैठ जाती और रूह पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेती है, तब अलग नहीं होती है ।''

क़ैसर–''यह व्यक्ति कभी प्रतिज्ञा करके उसे तोड़ भी देता है ?''

अबू सुफ़यान–''नहीं । लेकिन इस साल हमारा समझौता उससे हुआ है, देखिए क्या अंजाम हो ।'' अबू सुफ़यान कहते हैं कि मैं इस जवाब में इतना शब्द ज़्यादा कर सका था, मगर क़ैसर ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा कि बेशक नबी अहद (प्रतिज्ञा'' तोड़ने वाले नहीं होते । वचन-भंगिता सांसारिक लोग किया करते हैं । नबी दुनिया के अभिलाषी नहीं होते ।''

क़ैसर–''कभी उस व्यक्ति के साथ तुम्हारी लड़ाई भी हुई ? अबू सुफ़यान ने कहा कि हां । इस पर क़ैसर ने कहा कि तो जंग का परिणाम क्या रहा ?''

अबू सुफ़यान–''कभी वह विजयी रहा (जंगे बद्र में) और कभी हम (जंगे उहद में)। इस पर हिरक़्ल ने कहा–''ख़ुदा के नबियों का यही हाल होता है, लेकिन अंततः ख़ुदा की मदद और विजय उनको प्राप्त होती है ।''

फिर इसके बाद क़ैसरे रोम ने अबू सुफ़यान से पूछा कि उसकी शिक्षाएं क्या हैं ? इस पर अबू सुफ़यान ने कहा कि वह कहता है कि केवल एक ख़ुदा की इबादत करो और बाप-दादा के तरीक़े (मूर्ति-उपासना) को छोड़ दो । नमाज़, रोज़ा, सच्चाई, पाकदामनी और दयालुता का व्यवहार लोगों के साथ करो ।

यह सुनकर हिरक़्ल ने कहा कि नबियों के यही लक्षण हमें बताए गये हैं । मैं यह तो ज़रूर समझता था कि दुनिया में नबी का आगमन होने वाला है, लेकिन यह न समझता था कि वह अरब में से होगा । अबू सुफ़यान ! अगर तुमने सच-सच जवाब दिए हैं, तो वह एक दिन इस जगह का जहां मैं बैठा हूं (सीरिया व बैतुल मक़दिस) ज़रूर मालिक हो जाएगा । काश मैं उसकी सेवा में पहुंच सकता और नबी के पांव धोया करता ।

ईद मिलन के सद्भावना प्रोग्राम

■ ज़हीर ललितपुरी

माहे मुबारक रमज़ान का सबसे बड़ा दुनियावी फ़ायदा ईदुल-फ़ित्र का त्योहार है । एक महीने की कठिन इबादत के बाद एक दिन ऐसा आता है जिस दिन हमें ख़ुशी मनाने और अल्लाह का शुक्रिया अदा करने का मौक़ा मिलता है । इस ख़ुशी के मौक़े को हम लोगों का दिल जीतने और उनके दिल में जगह बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं । क्यों न हम ईदुल-फ़ित्र के हफ़्ते को सद्भावना हफ़्ते के तौर पर मनाएं । ऐसा करने से हमारे रास्ते आसान हो सकते हैं, हमें अल्लाह की रज़ा भी हासिल हो सकती है और दुनिया वालों की नज़रों में हमारी इज़्ज़त, अज़मत और वक़ार भी बढ़ सकता है ।

आजकल सारी दुनिया में मुस्लिम उम्मत दूसरे इन्सानी गिरोहों की नफ़रत का सबसे ज़्यादा शिकार है । जिन्हें तमाम इन्सानों का पेशवा बनाया गया था वो ही गुलामों से बदतर ज़िन्दगी गुज़ारने को मजबूर हैं । जो लोग इस्लाम की दावत के काम में और तहरीक इस्लामी के मिशन को आगे बढ़ाने में लगे हैं उनके काम में भी इस वजह से दिक़्क़त पेश आ रही है । इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इस उम्मत ने अपने वजूद के सही मक़सद और तरीक़ेकार को छोड़ दिया है और दुनिया के दूसरे लोगों के पीछे चलने के लिए मजबूर हो गयी है । उम्मते मुस्लिमा अगर आज नफ़रत का शिकार है तो उसके लिए वह ख़ुद भी ज़िम्मेदार है । इसलिए इस नफ़रत को ख़त्म करने के लिए उसे ख़ुद कोशिश करनी होगी ।

नफ़रत फैलाना आसान है लेकिन इसे मिटाना भी मुश्किल नहीं । अक्सर ऐसे मौक़े मिलते हैं कि हम छोटी-सी सकारात्मक कोशिश करके वर्षों पुरानी दुश्मनी और नफ़रत को ख़त्म कर सकते हैं । ख़ुशी और ग़म के कई मौक़े ऐसे ही मौक़े होते हैं । त्योहारों के मौक़ों पर भी वर्षों पुरानी दुश्मनी और नफ़रत को ख़त्म किया जा सकता है । इस्लामी माह रमज़ानुल मुबारक और ईद के मौक़े पर हम नफ़रत जैसी बुराइयों को भी ख़त्म कर सकते हैं । ईद मिलन के सद्भावना कार्यक्रम इसका बहुत अच्छा ज़रिया है । रमज़ान और ईदुल फ़ित्र के बेशुमार फ़ायदों में से एक बहुत बड़ा फ़ायदा यह भी है कि हम इस दौरान लोगों के बीच प्यार, हमदर्दी, मानव सेवा जैसे नेक अमल और इस्लामी विचारों, उपदेशों और प्रवचनों के ज़रिये इस्लाम और मुसलमानों के प्रति ग़ैर-मुस्लिम लोगों के दिल से ग़लतफ़हमियों को दूर कर सकते हैं ।

समाज में प्यार, मुहब्बत, हमदर्दी, सद्भावना और भाईचारे का माहौल बनाने के लिए इससे अच्छा मौक़ा दूसरा नहीं हो सकता है । हर साल रमज़ान महीने के दौरान और ईद के दिन और इसके बाद हफ़्ते भर होने वाले ईद मिलन के प्रोग्रामों को सद्भावना प्रोग्राम के रूप में मनाया जाए तो कोई अलग से सद्भावना अभियान चलाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी । ईद मिलन के सद्भावना प्रोग्राम इन्सानी तहज़ीब का ख़ास हिस्सा हैं । निस्संदेह ईद के इस्लामी त्योहार समाज में ख़ुशियां फैलाने पड़ोसियों के सुख-दुख में भागीदार बनने तथा लोगों के बीच समरसता, सद्भावना और सौहार्द फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । हमारे देश में जब ईद का त्योहार आता है मुसलमानों के साथ-साथ अन्य सभी समुदायों के व्यक्ति भी ख़ुशी से झूम उठते हैं और इस ख़ुशी का प्रभाव ईद मिलन के सद्भावना कार्यक्रमों के रूप में सामने आता है । ईद मिलन के सद्भावना कार्यक्रमों के ज़रिये इन्सानियत के रिश्ते मज़बूत होते हैं इसलिए इनका बहुत ख़ास महत्व है ।

ईद के मायने हैं ख़ुशी । त्योहार ख़ुशी का मौक़ा होता है इसलिए इस्लाम धर्म में त्योहार को ईद कहा जाता है । मुस्लिम समाज हर साल दो ईद मनाता है, ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा जो इस्लामी त्योहार हैं । ईद मीलादुन्नबी का त्योहार भी ईद के रूप में मनाया जाता है । चूंकि इस्लाम धर्म एक चिरस्थाई, सार्वभौमिक, विश्वव्यापी धर्म है और उच्चतम आस्थाओं, मानदंडों और मानव मूल्यों पर आधारित है इसलिए इसकी प्रकृति, प्रभाव, परिणाम, उपलब्धियां और लाभ भी चिरस्थाई, सार्वभौमिक, विश्वव्यापी और समस्त मानवता व सृष्टि के लिए है ।

ईद के त्योहार भी इस्लामी त्योहार हैं इसलिए उनकी

प्रकृति, प्रभाव, परिणाम, उपलब्धियां और लाभ भी चिरस्थाई, सार्वभौमिक, विश्वव्यापी है । हालांकि लोग इन्हें मुस्लिम समुदाय का त्योहार मानते हैं और दुनिया के कोने-कोने में फैले मुसलमान बड़ी अक़ीदत से इन त्योहारों को मनाते हैं । चूंकि यह एक इस्लामी त्योहार है इसलिए इस्लामी तरीक़े से मनाए जाते हैं और दुनिया भर के इस्लाम धर्म के अनुयायी तक़रीबन एक ही इस्लामी तरीक़े के अनुसार ये त्योहार मनाते हैं इसलिए आज भी ईद के त्योहारों का प्रभाव, परिणाम, उपलब्धियां और लाभ समस्त मानवता को समान रूप से प्राप्त होते हैं ।

इस्लामी कैलेंडर हिजरी के माह शाबान, रमज़ान और शव्वाल में इस्लाम धर्म के महत्वपूर्ण स्तंभ रोज़े की इबादत और ईदुल फ़ित्र की तैयारियों के लिए होते हैं । दुनिया के मुसलमान शाबान के महीने से रमज़ान के महीने में रोज़े की इबादत, तरावीह की नमाज़ों, क़ुरआन की तिलावत, ज़कात, ख़ैरात, सदक़े और फ़ितरे के इंतिज़ाम करने में जुट जाते हैं और आख़िर में ईदुल-फ़ित्र के दिन इनका समापन हो जाता है । इसे मीठी ईद भी कहते हैं क्योंकि इसमें एक ख़ास डिस सिवइयों की मिठास के साथ मुसलमानों के बेहतरीन अख़्लाक़, प्यार, मुहब्बत और भाईचारे की भी मिठास भी होती है जिसकी लज़्ज़त का एहसास माहौल में मिठास भर देता है । ग़ैर-मुस्लिम भाइयों की मुबारकबाद और शुभकामनाओं की सदाएं इस माहौल की मिठास को और बढ़ा देती है ।

ईद के दिन हर मुसलमान के घर में बिछे दस्तरख़्वानों और डाइनिंग टेबल पर तरह-तरह की खाने-पीने की चीज़ें जैसे सिवईएं, दही-बड़े, छोले-भटूरे, रूह अफ़्ज़ा और शरबते आज़म से बने शरबत और जाने क्या-क्या नेमते अल्लाह की तरफ़ से उतरती रहती हैं और इनके साथ आसमान से उतरती है रूहानी खुशी, अल्लाह के प्रति कृतज्ञता का क़ुदरती एहसास, प्यार, मुहब्बत, भाईचारा वग़ैरह-वग़ैरह । इस माहौल में हमारे ग़ैर-मुस्लिम पड़ोसी, मिलने-जुलने वाले, वर्क प्लेस के साथी, बेटों के दोस्त, बेटियों की सहेलियां घरों पर आकर जब ईद की मुबारकबाद देते हैं तो एक अजीब खुशगवार रवादारी का मंज़र हर तरफ़ नज़र आता है । छोटे-छोटे बच्चों के नन्हे-मुन्ने मासूम दोस्त जब ख़ूबसूरत लिबास पहनकर आते हैं और तोतली आवाज़ में आदाब, तस्लीम, नमस्ते, गुडमॉर्निंग, हेप्पी ईद कहकर हम सबका दिल जीत लेते हैं । बदले में उन्हें मिलता है बेशुमार प्यार, दुआएं और ईदी, गिफ़्ट, नज़राने, वो कितना सुख देते हैं । लेने वालों को भी सुख का एहसास होता है और देने वालों को भी । इसी मिठास और मुहब्बत भरे माहौल में ईदुल फ़ित्र के त्योहार के बाद से ख़ासतौर पर ईद मिलन समारोहों का आयोजन होता है जिनसे ऐसा माहौल बनता है कि लोग कल्पना भी नहीं कर पाते हैं कि यहां इन्सान इन्सान में कोई फ़र्क़ भी है ।

इसी तरह दूसरी ईदों के मौक़ों पर भी प्यार भाईचारे को माहौल बनता है । ईद मनाने का जो इस्लामी तरीक़ा है उससे ऑटोमैटिक सद्भावना कार्यक्रम या सद्भावना अभियान जैसा माहौल बन जाता है । लेकिन जब ख़ासतौर से सद्भावना कार्यक्रम के आयोजन होते हैं उनका प्रभाव बहुत दूरगामी होता है । वास्तव में ईद के अवसर पर विभिन्न संप्रदायों द्वारा मनाए जाने वाले ये ईद मिलन के सद्भावना कार्यक्रम हमारे देश की एकता, अखंडता और गंगा जमुनी संस्कृति को मज़बूत करते हैं और अगर उन्हें और अधिक जागरूकता, समझदारी और कारगर तरीक़े से आयोजित किया जाए तो नफ़रत, अलगाववाद, संप्रदायवाद, फॉसीवाद और आतंकवाद फैलाने वाली हमारे देश की विध्वंसक दुश्मन ताक़तों के नापाक मंसूबों को नाकाम कर सकते हैं ।

इन दिनों फिर से नफ़रत की लहर चलाई जा रही है । कुछ लोगों के स्वार्थ विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के बीच नफ़रत फैलाने से ही सधते हैं । उनकी राजनीति, धर्म और संस्कृति की बुनियादें सिर्फ़ और सिर्फ़ मुस्लिम दुश्मनी पर टिकी हैं । हमारे देश में कुछ संगठन, मिशन और आन्दोलन ऐसे हैं जिनका अस्तित्व ही मुस्लिम दुश्मनी की बुनियाद पर टिका है । ये संगठन अपने स्वार्थों के लिए मुसलमान और इस्लाम धर्म की छवि ख़राब करते हैं, उनके सिद्धांतों पर उंगली उठाते हैं और उन्हें बदनाम करने के लिए तरह-तरह की साज़िशें करते हैं । दूसरे धर्म के लोगों को उनके ख़िलाफ़ भड़काते हैं । इससे नफ़रत का जो माहौल तैयार होता है उसके बहुत घातक परिणाम होते हैं । हर ख़ास और आम को बहुत-सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है ।

मुस्लिम समाज के प्रबुद्ध, समझदार इन्सान, धार्मिक विद्वान, शांति के समर्थक और तहरीक इस्लामी के ध्वजावाहक कार्यकर्ता अगर चाहें तो रमज़ान और ईदुल फ़ित्र के त्योहार के मौक़े पर सद्भावना अभियान चलाकर नफ़रत फैलाने वालों और विभिन्न संप्रदायों के लोगों को लड़ाने वालों के मंसूबों को नाकाम कर सकते हैं । इसलिए हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि ऐसे मौक़ों का फ़ायदा उठाकर लोगों के बीच प्यार, मुहब्बत, हमदर्दी, सद्भावना और भाईचारे का माहौल तैयार करने की कोशिश करें ।

"अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो और अपने हाथों अपने आपको तबाही में न डालो। अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ कि अल्लाह अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाने वालों को पसन्द करता है।"

(क़ुरआन, 2:195)

A Well Wisher

GOA

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

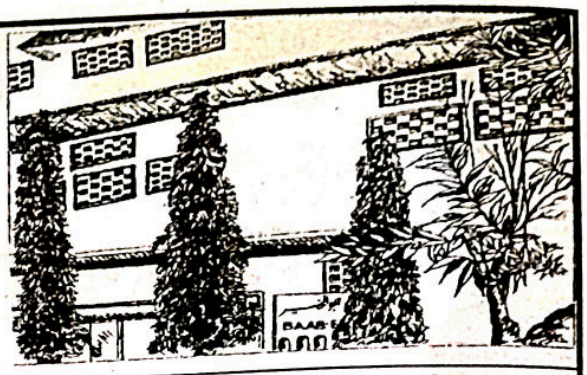

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 30 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A.,B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 11 बैच 103 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 7 बैच 65 छात्राएं ● 1993 ई० से 2018 ई० तक 87 अनाथ बच्चियों और 61 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 35 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 110 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 18,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,35,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

पुरुष ही संरक्षक क्यों ?

■ बुशरा सादिक़ा

सभ्यता और समाज की जो उच्च सेवा स्त्री से लेना वांछित है और जिस उद्देश्य के लिए जन्म देने का बोझ इस पर डाला गया, उन उद्देश्यों के लिए ज़रूरी था कि उसे समाज में सम्मान और सुरक्षा प्राप्त हो । इसलिए बाहरी वातावरण और उसकी गन्दगियों से सुरक्षित करने का प्रबंध किया गया । सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन, पर्दे और निगाहें नीची रखने के आदेश उसको यह सुरक्षा, सम्मान और गरिमा प्रदान करते हैं । नारी के नारीत्व और फ़ितरत को बरक़रार रखने के लिए पुरुष को ही संरक्षक बनाना परम आवश्यक था । स्त्री के कार्य-क्षेत्र को स्पष्ट करते हुए नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"स्त्री अपने पति के घर की हाकिम है और अपनी हुकूमत के दायरे में अपने कर्म के लिए उत्तरदायी है ।"

(हदीस : बुख़ारी)

यह कार्य-क्षेत्र ठीक उसकी फ़ितरत और स्वभाव के अनुसार है । अत: ईश्वर ने पुरुष को संरक्षक बनाकर स्त्री का आर्थिक कफ़ील (ज़िम्मेदार) बना दिया और उसके मान-सम्मान की सुरक्षा और समस्त आवश्यकताओं को पूरा करने वाला बनाकर स्त्री को ख़ुद दूसरे बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए आज़ाद कर दिया । उसका मूल कार्य मानवजाति की अमानत को संभालना, अपने ख़ून-जिगर से उसे सींचना और शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करना है और इस तरह मानव-समाज को उसकी सबसे क़ीमती पूंजी का प्रबंध करना है । इसी सेवा ने उसे महानता के उस स्थान पर पहुंचाया कि जन्नत इसके क़दमों तले और पिता की अपेक्षा तीन गुना अधिक सेवा का हक़दार ठहराया । यह स्थान उस समानता और बराबरी से बहुत ऊंचा है, जिसके लिए आज इस महान हस्ती को दौड़ाया जा रहा है ।

आर्थिक संरक्षण

पुरुष को क़व्वाम (संरक्षक) बनाने की दूसरी बड़ी वजह क़ुरआन की आयत में हमें मिल जाती है जिसमें पुरुष को क़व्वाम बनाने का आदेश दिया गया ।

"मर्द औरतों के मामले में ज़िम्मेदार है, इस आधार पर कि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे के मुक़ाबले में आगे रखा है, और इस आधार पर कि पुरुष अपने माल ख़र्च करते हैं ।"

(क़ुरआन, 4:34)

अर्थात पुरुष पर परिवार के लिए रोज़ी कमाने और ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी है । सिवाए किसी अपवादित स्थिति के परिवार के संरक्षण का बोझ पुरुष उठाता है और अपनी क्षमताओं के लिहाज़ से वही इस बोझ को उठाने के लायक़ है । बीवी-बच्चों के भरण-पोषण का क़ानूनी उत्तरदायी पुरुष ही है स्त्री नहीं । इसलिए पुरुष ही इस बात का पात्र है कि इस बड़ी ज़िम्मेदारी के कारण उसको संरक्षण का अधिकार दिया जाए ।

स्वाभाविक एवं शारीरिक संरचना

यह एक सच्चाई है कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर हर तरह की योग्यता एवं क्षमता नहीं होती । कोई किसी कार्य के लिए उचित है तो कोई किसी दूसरे कार्य के लिए अनुचित होगा । किसी की शारीरिक संरचना, मेहनत और मशक़्क़त बर्दाश्त करेगी तो कोई बिल्कुल उसके योग्य न होगा । कोई वैज्ञानिक अन्वेषण की योग्यता रखता है, तो कोई कलाकार बनने की क्षमता अपने अन्दर रखता है । योग्यताओं एवं क्षमताओं का यह अन्तर यूं तो दो व्यक्तियों के बीच पाया जाता है, लेकिन जहां इन्सानों में से पुरुष और स्त्री की आपस में तुलना की जाए तो यह अन्तर बहुत ही स्पष्ट नज़र आने लगता है । स्त्री और पुरुष के बीच यह अन्तर शरीअत की नज़र में वैचारिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं से है। अत: स्त्री के संबध में नबी (सल्ल०) का कथन है–

"स्त्री नाक़िस है अक़्ल और दीन में ।"

(हदीस : बुख़ारी)

यहां अक़्ल से मानसिक शक्ति की ओर संकेत है और दीन से तात्पर्य उसकी शारीरिक शक्तियां हैं अर्थात इन दोनों पहलुओं से वह पुरुष से कमज़ोर और कमतर है ।

(सैयद जलालुद्दीन उमरी
'स्त्री इस्लामी माअशरे में' पेज-200)

आधुनिक अन्वेषणों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि स्त्री का दिमाग़ पुरुष के दिमाग़ से छोटा है । (मौलाना मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन, इस्लाम का निज़ामे इफ़्फ़त व अज़मत, पेज-247) । फिर स्त्री हर हाल में और हर समय स्वस्थ नहीं रहती । इस पर ज़िन्दगी में कुछ समय ऐसा गुज़रता है जिसमें वह बड़ी हद तक विवश हो जाती है और दूसरे की सहायता और मदद की मोहताज रहती है । मेरा तात्पर्य गर्भ, दूध पिलाने, बच्चों की देख-रेख और अपवित्रता की अवधि से है । भावनाओं में बह जाना, शर्म और ज़िन्दगी की नज़ाकत, इन्तिहापसन्दी की ओर झुकाव और मुहब्बत स्त्री की फ़ितरत है और यह स्त्री के लिए ऐब नहीं, बल्कि उसका हुस्न (सौंदर्य) है, इससे जो कुछ भी फ़ायदा उठाया जा सकता है, फ़ितरत पर क़ायम रखकर ही उठाया जा सकता है । उसको पुरुषों की तरह सीधा और सख़्त बनाना उसको तोड़ने के समान है ।

अतएव इस्लामी शरीअत ने उसकी उन कमज़ोरियों को केवल स्वीकार ही नहीं किया है, बल्कि ज़िन्दगी के हर पहलू में उनकी छूट दी है । चूंकि दुनिया में कार्य एक ही प्रकार के नहीं होते । छोटे-बड़े, महत्वपूर्ण और ग़ैर-महत्वपूर्ण हर प्रकार के होते हैं । उनको करने के लिए उसी प्रकार की योग्यताओं की आवश्यकता होती है और पुरुष बौद्धिक एवं शारीरिक शक्तियों में स्त्री से मज़बूत होता है । वह अधिक शक्तिशाली और बलवान होता है । गंभीर और स्थिर स्वभाव वाला होता है और आमतौर पर हर समय एक जैसी स्थिति में रहता है । इसलिए उसको संरक्षक बनाकर उसको वही काम दे दिए, जो उसके स्वभाव और योग्यता के अनुसार थे । उदाहरण के तौर पर बाहरी ज़िम्मेदारियां, आर्थिक दौड़-धूप, रक्षा और हुकूमत की ज़िम्मेदारियां आदि ।

ग़ौर कीजिए तो ज्ञात होगा कि ये सारे कार्य मानव (स्त्री-पुरुष दोनों की) प्रकृति के अनुसार हैं । यह प्रकृति (फ़ितरत) ईश्वर की प्रदान की हुई है । किसी लिंग के कारण उसे ख़ुद प्राप्त नहीं हुआ । इसी प्रकार श्रेष्ठता की प्राप्ति में पुरुष की अपनी किसी कोशिश या इच्छा की कोई भूमिका नहीं । यह स्रष्टा की अपनी योजना है, जिसके अंतर्गत उसने पुरुष और स्त्री के बीच यह दर्जाबन्दी की है। इस पर आपत्ति करने वाले और इसके ख़िलाफ़ चीख़ने-चिल्लाने का अर्थ इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि हम ईश्वर के इस फ़ैसले से प्रसन्न नहीं हैं । अत: अब अगर किसी को इस प्राथमिकता और निर्धारण पर आपत्ति हो तो उसे बुद्धिहीन ही कहा जा सकता है ।

स्वाभाविक कार्य निर्धारण को न मानने के परिणाम

यह बात भी समझ लीजिए कि ईश्वर के इस कार्य निर्धारण के विरुद्ध जब भी इन्सान ने कोई काम किया वह तबाह और बर्बाद ही हुआ । स्त्री ने ईश्वर के कार्य निर्धारण के अनुसार एक पुरुष की सेवा को दासता समझा तो वह एयर होस्टेस, टेलीफ़ोन ऑपरेटर, प्राइवेट सिक्रेट्री और मज़दूर की हैसियत से हर जगह सैकड़ों पुरुषों की दास बन गयी। पार्लियामेंट हो, बैंक हो, राजनीतिक पार्टियां हों, ट्रेड यूनियन, संस्थाएं, कार्यालय हों या कारख़ाने, रक्षा मंत्रालय या गृह मंत्रालय आम कारोबारी संस्थान हों या डिपार्टमेंटल स्टोर जैसी बड़ी-बड़ी दुकानें, कोई ऐसी जगह है, जहां स्त्री की श्रेष्ठता तो छोड़िए उसकी समान हैसियत भी स्वीकार की गयी हो ?

जो स्त्री मात्र अपने पति का बिस्तर बिछाया करती थी वह अब बड़े-बड़े होटलों, क्लबों और मनोरंजन स्थलों पर सैकड़ों अपरचित पुरुषों के बिस्तर सजाया करती है, जो अपने एक पति और बच्चों को प्यार व मुहब्बत के वातावरण में खाना खिलाती, वह अब होटलों और क्लबों की मेज़ों पर हज़ारों पुरुषों को खाना खिलाती, शराब पिलाती और उनकी झिड़कियां सुनती है । उनकी अश्लील बातों का निशाना बनती है । उनके हाथों अपनी इज़्ज़त लुटाती है और इज़्ज़त और सम्मान के बजाए तिरस्कार और अपमान उसकी क़िस्मत बनती है ।

वास्तविकता यह है कि यूरोप और उसकी अंधी पैरवी करने वालों ने स्त्री को दिया तो कुछ नहीं मगर उससे सब कुछ छीन लिया । उसका घर, उसका सुकून, उसकी इज़्ज़त, उसका हुस्न, उसका शरीर, उसकी क्षमताएं–उसका ज़बरदस्त शोषण किया और उसे जुल्म और अन्याय की चक्की में पीस डाला, उसे ''अधिकारों'' के नाम पर बेवक़ूफ़ बनाया गया । वह मूर्ख और भ्रमित होकर अपने मान-सम्मान, मर्यादा और पवित्रता एवं सम्मानित हैसियत खो बैठी है । स्त्री को तिरस्कार और अपमान में धकेलने और संरक्षण के सारे सहारों से वंचित करके अपनी जीविका और रोज़ी कमाने की मुसीबत में ग्रस्त करने के शैतानी उपायों और साज़िशों ने जिस छलपूर्ण नौटंकी की आड़ में उसे आगे बढ़ाया है वह स्त्री और पुरुष की समानता ही का नारा है ।

स्त्री के लिए वास्तविक समानता

निस्संदेह यह एक स्पष्ट वास्तविकता है कि आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के ज़रिए स्त्री और पुरुष की समानता का जो उसूल और क़ानून हम तक पहुंचा दिया वही अस्ल और अटल है । वह उसूल यह है कि जिस प्रकार के अधिकार पुरुषों के स्त्रियों पर हैं, उसी प्रकार के अधिकार स्त्रियों के पुरुष पर हैं । यह क़ानून वास्तव में समानता का आधार और ऐलान है । अब भी अगर किसी को यह ग़लतफ़हमी हो कि पुरुष की क़व्वामियत (संरक्षण) से स्त्री के अधिकारों का हनन हो रहा है तो उपरोक्त मौलिक अधिकारों में से हर एक को बारी-बारी ले लीजिए और ऊपर की बहसों की रोशनी में पुरुषों के साथ तुलना कीजिए । अगर आप पक्षपात और स्वार्थ से ग्रस्त नहीं हैं तो आप अवश्य पुकार उठेंगे कि निस्संदेह मात्र इस्लाम ही ऐसा धर्म और विधान है जिसने स्त्रियों को पुरुषों से कहीं ज़्यादा अधिकार दिए हैं । हां, पुरुष संरक्षक होने की हैसियत से निस्संदेह स्त्री से एक दर्जा बुलन्द है, लेकिन यह एक दर्जा कर्तव्यों के मामलों में ही बुलन्द है अधिकार के मामले में नहीं ।

स्त्री पीड़ित क्यों ?

स्त्री और पुरुष के अधिकारों के बारे में अपने धर्म से व्यापक और पूर्ण क़ानून पा लेने के बाद और स्त्री एवं पुरुष के अधिकारों में ऐसी संतुलित समानता जान लेने के बाद भी एक प्रश्न दिमाग़ में खटकता रहता है कि प्रथम दौर की कुछ शताब्दियों के अलावा स्त्री पीड़ित क्यों रही ? दूर जाने की आवश्यकता नहीं । भारत में मुसलमानों के शासनकाल में स्त्री को कौन-सा ''ऊंचा स्थान'' दिया गया और आज इस्लामी प्रजातंत्र पाकिस्तान में भी स्त्री को कौन से समान अधिकार दिए जा रहे हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर बहुत आसान है । अगर सही निगाहों से देखा जाए तो सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी बात यह है कि मुसलमानों की हुकूमत और इस्लामी हुकूमत बदक़िस्मती से दो अलग-अलग शब्दावली हैं । यह ज़रूरी नहीं कि जो मुसलमानों की हुकूमत हो, वह पूरी तरह से इस्लामी भी हो । मुसलमानों के शासनकाल में कहीं पश्चिमी सभ्यता प्रभावी रही और कहीं पूर्वी । और ऐसी रस्म और परंपराएं समाज में फैलती रहीं जिनका इस्लाम से कोई लेना-देना नहीं । स्त्रियों के अधिकारों का मसला भी दुर्भाग्यवश इसी प्रकार ग़लत ढंग से समझा गया और इस बुरी तरह तोड़ा-मरोड़ा गया कि इसमें और पति-पत्नी के अस्ल इस्लामी क़ानून में बहुत ही दूर की समानता बाक़ी रह गयी । अब इस्लामी शरीअत के नाम से मुसलमानों में दाम्पत्य जीवन के जो क़ानून प्रचलित हैं वे न उचित हैं न व्यापक और न पूर्ण । इसकी कमियों ने मुसलमानों के सभ्य-जीवन पर इतना बुरा प्रभाव डाला है कि शायद किसी दूसरे क़ानून ने नहीं डाला ।

नकारात्मक अधिकारों के लिए सकारात्मक प्रयास

स्त्री के उत्पीड़न की मूल सीमा वह है जहां उसे इस्लाम के द्वारा प्रदान किये हुए अधिकारों से वंचित होना पड़ता है और जहां पुरुष अल्लाह और रसूल (सल्ल॰) के निर्धारित किये हुए अधिकारों को अदा नहीं करते । आर्थिक ज़िम्मेदारी महर, भरण-पोषण और विरासत जैसे कर्तव्यों का निर्वाह नहीं करते । उन्हें ऐसे अवसर प्रदान नहीं करते जहां वे अपनी फ़ितरत, योग्यता और कार्य-क्षेत्र के अनुसार आज़ादी से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर सकें, वे उन पर ज़्यादती करते हैं । मामूली-मामूली बातों पर तीन तलाकें दे मारते हैं । अलग रहने की स्थिति में उनका माल हड़प कर लेते हैं और अधिकारों के हनन पर न्याय भी नहीं देते ।

ये सारे रूप अत्याचार के हैं और जो स्त्री या पुरुष इस अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं, आन्दोलन करते हैं, संगठन बनाते हैं वे सब भलाई का काम करते हैं । हर ईमान वाले को उनका सहयोग करना अनिवार्य है । इस्लाम के दिये हुए अधिकारों को पुनः प्राप्त करने के लिए ऐसे हर संगठन के संघर्ष में हम उनके साथ हैं । लेकिन अधिकारों के नाम पर एक ''मक्कार गिरोह'' अगर नारी उत्पीड़न के बारे में हमारी स्त्रियों को पश्चिम की दी हुई आज़ादी के रंग में रंगना और ख़ानदान की इकाई और संस्कृति को बर्बाद करके उसको अपनी संयुक्त सभाओं की शोभा बढ़ाना चाहता है, तो उससे हमारी खुली लड़ाई है ।

उपरोक्त बौद्धिक तर्कों के प्रकाश में यह प्रमाणित हो गया है कि इस्लाम के प्रदान किये हुए अधिकार स्त्री और पुरुष के बीच न्याय एवं समानता पर आधारित हैं और अनुभव से भी यह पूर्णतया स्पष्ट हो चुका है कि जब और जहां इन उसूलों और सिद्धांतों की अवहेलना की गयी, वहीं क़ौम के आचरण और नैतिकता पर दुष्प्रभाव पड़े और क़ौम बर्बादी और विनाशता के गढ्ढे में जा गिरी । वास्तविकता यह है कि इस्लामी क़ानून ईमान, बुद्धि, तर्क, अनुभव व्यावहारिकता आदि के पैमाने पर पूरे उतरते हैं ।

"विशेष रूप से सहायता के हक़दार वे निर्धन लोग हैं जो अल्लाह के कार्य में ऐसे घिर गये हैं कि अपने व्यक्तिगत जीविकोपार्जन के लिए धरती में कोई दौड़-धूप नहीं कर सकते । उनका स्वाभिमान देखकर अनजान आदमी समझता है कि ये संपन्न हैं । तुम उनके चेहरों से उनकी भीतरी हालत पहचान सकते हो । मगर वे ऐसे लोग नहीं हैं कि लोगों के पीछे पड़कर कुछ मांगें । उनकी सहायता में जो माल तुम ख़र्च करोगे वह अल्लाह से छिपा न रहेगा ।"

(क़ुरआन, 2:273)

A Well Wisher

GOA

हज़रत उसामा इब्ने ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–"हश्र के दिन एक व्यक्ति दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा, उसकी आंतें बाहर आ जाएंगी और वह जहन्नम में गधे की तरह घूमता फिरेगा । जहन्नम के लोग उसके आसपास इकट्ठा होकर पूछेंगे कि क्या हुआ तुम तो हमें अच्छाइयों की हिदायत देते थे और बुराइयों से रोकते थे ? वह कहेगा कि मैं आप सबको हिदायतें ज़रूर देता था कि भले काम करो और बुराई से बचो पर मैं ख़ुद उस पर अमल नहीं करता था ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

A Well Wisher

GOA

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی ادویات

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

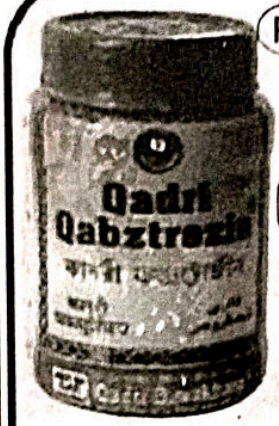

گیسٹک کے درد میں

قادری قبض ٹروجن

درد

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے



گھٹیا کے درد میں؟

زعفرانی تیل

کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ، گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

شوگر کی کامیاب دوا

ذیابطیش سی

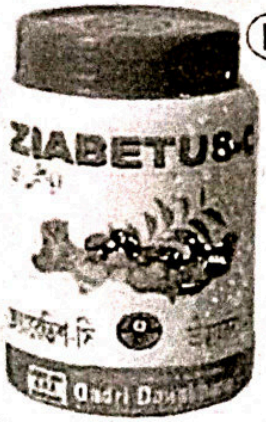

مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph. No. 2469-3173-2489-3539
www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

पहली शहीद सहाबिया

● संपादन प्रभाग

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मक्कावासियों के सामने जब इस्लाम पेश किया, तो औरतों में हज़रत सुमैया (रज़ि०) और उनके पति हज़रत यासिर (रज़ि०) ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इस घटना के बारे में जब क़ुरैश के लोगों को मालूम हुआ, तो उन्होंने अबू लहब की अगुआई में नबी करीम (सल्ल०) और आप (सल्ल०) के नेक साथियों को दुख-तकलीफ़ पहुंचाने की मुहिम छेड़ दी।

इस्लाम में अल्लाह तआला ने औरतों को जो मान-सम्मान दिया है, वह किसी दूसरे धर्म में नहीं मिलता। सबसे पहले सत्य धर्म को स्वीकार करने वाली भी औरत थी और सबसे पहले सत्य धर्म और संमार्ग पर प्राण निछावर करने वाली भी एक औरत थी। इस्लाम की राह में तन-मन-धन और शहादत की नेमतों से सरफ़राज़ होने वाली कोई और नहीं, बल्कि वो हज़रत सुमैया (रज़ि०) थीं, जो इस उम्मते मुहम्मदिया के फ़िरऔन अबू जहल के चचा अबू हुज़ैफ़ा बिन मुग़ीरा की ग़ुलाम थीं। उसने अपने हलीफ़ (दोस्त) हज़रत यासिर बिन आमिर बिन मालिक अंसी से हज़रत सुमैया (रज़ि०) की शादी करा दी, जिससे उनके यहां हज़रत अम्मार (रज़ि०) पैदा हुए। इस्लाम में सबसे पहली मस्जिद बनवाने वाले यही हज़रत अम्मार (रज़ि०) हैं, जिन्होंने हिजरत (प्रवास) के बाद आप (सल्ल०) के लिए नमाज़ की अदायगी और सख़्त दोपहर में आराम करने के लिए पत्थर जमा करके "क़ुबा" (एक जगह का नाम) में मस्जिद बनायी।

हज़रत यासिर (रज़ि०) क़हतान के रहने वाले थे। अपने एक खोये हुए भाई की खोज में अपने दो भाइयों के साथ मक्का आये। उनके दोनों भाई हारिस और मालिक तो यमन वापस चले गये, मगर हज़रत यासिर (रज़ि०) मक्का में ही रह गये और अबू हुज़ैफ़ा मख़्दूमी के हलीफ़ (दोस्त) बन गये थे। जब तक अबू हुज़ैफ़ा जीवित रहे, तब तक यासिर (रज़ि०) उनके साथ रहे। मक्का में जब इस्लाम की सदा गूंजी, तो इस छोटे से परिवार ने आगे बढ़कर इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

बनी मख़्ज़ूम के इस ग़ुलाम परिवार ने जैसे ही इस्लाम क़ुबूल किया, उन पर ज़ुल्मोसितम के पहाड़ तोड़े गये और अत्याचार व क्रूरता की एक नयी दास्तान शुरू हो गयी। अस्दुलग़ाबा में उल्लिखित है कि "उनको गर्मी की चिलचिलाती हुई धूप में कंकड़ियों पर लिटाया जाता और लोहे की ज़िरह पहनाकर धूप में खड़ा किया जाता, ताकि धूप में लोहा तपने लगे और उसकी गर्मी से तकलीफ़ और ज़्यादा हो।" (अस्दुलग़ाबा)

तब्क़ात इब्ने सअद में लिखा है कि इन्हें धूप के समय कुफ़्फ़ारे मक्का तपती हुई रेत पर लाते और मारते-मारते बेहोश कर देते। कभी पानी में गोते लगाते और कभी अंगारों पर लिटाते। उस दौरान जब नबी करीम (सल्ल०) उनके पास से गुज़रते तो हज़रत अम्मार (रज़ि०) के सिर पर हाथ फेरते और फ़रमाते, "ऐ आग ! तू अम्मार के हक़ में बर्दोसलाम (ठंडी व सलामती) बन जा, जिस तरह तूने हज़रत इबराहीम (अलैहि०) पर बर्दोसलाम बन गयी थी।" और कभी उन्हें सब्र करने के लिए कहते और जन्नत का वादा फ़रमाते। (अस्दुलग़ाबा)

आप (सल्ल०) उन्हें मुसीबत में घिरा हुआ देखकर कहते, "ऐ आले यासिर सब्र करो ! और कभी कहते ऐ अल्लाह तू आले यासिर की मग़फ़िरत फ़रमा और कभी फ़रमाते तुम को बशारत हो कि जन्नत तुम्हारी मुश्ताक़ है।" (अल-इस्तियाब)

उस सख़्त रेतीले अज़ाब की ताब न लाते हुए अंततः हज़रत यासिर (रज़ि०) शहीद हो गये। अन्यायियों ने उन्हें मरते दम तक चैन न लेने दिया। हज़रत सुमैया (रज़ि०) एक बार खड़ी थीं कि अबू जहल का उधर से गुज़र हुआ। उस अत्याचारी ने उनके गुप्तांग पर ऐसी बरछी मारी कि वे उस असह्य पीड़ा को सह न सकीं और अपने परवरदिगार से जा मिली अर्थात शहीद हो गयीं। शहादत के समय आप बहुत बूढ़ी और ज़ईफ़ थीं। आप औरतों में इस्लाम की सबसे पहली शहीद थीं। (अस्दुलग़ाबा)

'फ़तहुलबारी में है कि ग़ज़वह बदर में अबू-जहल जब मारा गया, तो आप (सल्ल०) ने हज़रत अम्मार (रज़ि०) की ओर संबोधित करते हुए कहा कि अल्लाह तआला ने तेरी मां के हत्यारे को हलाक कर दिया ।

(फ़तहुलबारी, भाग-7, पृष्ठ-17)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर मक्का के कुफ़्फ़ारों का कोई ज़ोर न चला, क्योंकि आप (सल्ल०) को आपके चचा अबू तालिब की हिमायत हासिल थी और अबू बक्र (रज़ि०) को उनके क़बीले वालों की । रह गये वे कमज़ोर और बेबश सहाबी जिनको मुश्रिकों ने पकड़ कर उन्हें लोहे की ज़िरहें पहनायीं और उन्हें तेज़ चिलचिलाती धूप में डाल दिया । सिवाय हज़रत बिलाल (रज़ि०) के उनके अज़ाबों और तकलीफ़ों के आगे कोई न ठहर सका कि उन्होंने अल्लाह के लिए अपनी जान हाज़िर कर दी और अपने आपको उन कुफ़्फ़ारों के सुपुर्द कर दिया । ये अत्याचारी उन्हें आवारा लड़कों के हवाले कर देते, जो मक्का की गलियों में घसीटते रहते थे । इतने दुख-दर्द और पीड़ा को सहते हुए हज़रत बिलाल (रज़ि०) के मुंह से 'अहद, अहद'' (अल्लाह एक है) के अतिरिक्त और कुछ न निकलता था ।

(मुसनद अहमद)

ये अत्याचारी उन कमज़ोर व बेबस सहाबियों को बारी-बारी कठोर यातना देते । मारते-मारते जब थक जाते, तो मारने के लिए दूसरे से कहते । अंततः कुछ लोग हिम्मत हार गये और उन कुफ़्फ़ारों की बात मान ली । वह बात यह थी कि या तो तुम लोग मुहम्मद (सल्ल०) को बुरा-भला कहो या लात-उज्जा, देवी-देवताओं की बड़ाई करो ।

हज़रत अम्मार (रज़ि०) और कुछ दूसरे कमज़ोर सहाबा कुफ़्फ़ारों के अत्याचार के सामने विवश होकर उनकी बात मान ली । फिर रोते हुए माफ़ी मांगते हुए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुए, तो इस सिलसिले में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की ।

''जिस किसी ने अपने ईमान के पश्चात अल्लाह के साथ कुफ़्र किया—सिवाय उसके जो इसके लिए विवश कर दिया गया हो और दिल उसका ईमान के साथ संतुष्ट हो ।''

(सूरह अन-नहल्, आयत-106)

हज़रत यासिर (रज़ि०) और उनके परिवार पर कभी उमैया बिन ख़ल्फ़ ज़ुल्म के पहाड़ तोड़ता, तो कभी अबू जहल उन लोगों को मारते-मारते बेदम कर देता । जब ये लोग थक जाते, तो दूसरा, तीसरा इन पर अत्याचार करता । ज़रा सोचिये ! अरब का रेगिस्तान, झुलसता अरब, रेतीला अरब, वो अरब जहां पीने का पानी कितने मुश्किल से मिलता है, उन्हें पीने के लिए पानी भी नहीं दिया जाता है, उस वक़्त जब ये लोग ज़ख़्मों से चूर हैं । सूखे हलक़ों के साथ फिर भी एक आवाज़ बुलन्द कर रहे हैं । अल्लाह एक है, अल्लाह एक है । यह कहते हुए हज़रत यासिर (रज़ि०) अपने ख़ुदा से जा मिले ।

अबू जह्ल गुस्से में सोचने लगा कि ये लोग नये दीन से हटते क्यों नहीं और मौत को गले लगाने के लिए तैयार हैं । अबू जहल सिटपिटा कर और तिलमिलाकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की शान में गुस्ताख़ी करने लगता है । हज़रत सुमैया (रज़ि०) को उसकी गुस्ताख़ी बर्दाश्त न होती है, वे भी अबू जहल को बुरा-भला सुनाने लगती हैं । यह बुज़दिल अबू जहल अपनी दिलेरी का सबूत एक बूढ़ी कमज़ोर और ज़ख़्मों से चूर औरत पर बरछी का वार करके करता है, जो कि उनकी गुप्तांग में लगती है । वे उस वार को बर्दाश्त नहीं कर पाती हैं और वहीं गिर कर शहीद हो जाती हैं । हज़रत सुमैया (रज़ि०) औरतों में पहली शहीद हैं ।

25 yrs. Service (Regd.)

AL KAUSAR HOLY HERBAL

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)

Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com

Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871

IFS Code No. BKID 0004461

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 100 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2018-2019 के सत्र के लिए आइ०ए०, बी०ए०, एम०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLiS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 18000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 25 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 75 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम पूरा हो चुका है ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK SWIFT CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

Local Donors मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 09955655960, 09801213022

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

BANK, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन — एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

इंशा अल्लाह ख़ां 'इंशा' :

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

समय शक्तिमान है, अत्यन्त बलवान है । इसके सामने किसी की कोई चाल नहीं चलती, चाहे दुनिया में वह अपनी सत्ता क़ायम रखने के लिए लाख चालें चलता रहा हो । समय की पकड़ से कोई नहीं बच सकता, चाहे वह सीसा पिलाई हुई दीवार से निर्मित भवन में रहता हो या कहीं और ।

इंशा अल्लाह ख़ां 'इंशा' को भी काल ने दबोच ही लिया, वे भी के गाल में समा गये । जो शेष बचें हैं, वे भी एक दिन काल-कवलित हो जायेंगे, उनकी सांसारिक जीवन-लीला भी समाप्त हो जायेगी, क्योंकि मनुष्य मरणशील है और हर जीव को मौत का मज़ा चखना है, विधि का विधान यही है ।



समय की इस अचूक पकड़ और अनुपम मारक क्षमता का वर्णन 'इंशा' ने अपनी एक कालजयी द्विपदी में इस प्रकार किया है–

कमर बांधे हुए चलने को यां सब तैयार बैठे हैं
बहुत आगे गये, बाक़ी जो हैं तैयार बैठे हैं

समय-चक्र किसी को भी चैन से बैठने नहीं देता–

भला गर्दिश फ़लक़ की चैन देती है किसे 'इंशा' !
ग़नीमत है कि हमसूरत यहां दो-चार बैठे है

उपर्युक्त द्विपदियों के रचनाकार 'इंशा' नवाब सआदत अली ख़ां-युग के महान कवि और गद्यकार हैं । उनकी रचनाएं तत्युगीन समाज और संस्कृति का सर्वांगपूर्ण चित्रण करती हैं ।

'इंशा' ने सन् 1804 ई० में फ़ारसी लिपि में अमर प्रेम कहानी 'रानी केतकी की कहानी' लिखी । साथ ही फ़ारसी भाषा में उर्दू के पहले व्याकरण और भाषाविज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'दरिया-ए-लताफ़त' की रचना की ।

'इंशा' बड़े ही ख़ुशमिजाज, हाज़िर जवाब और व्युत्पन्न बुद्धि व्यक्ति थे । उनका दिमाग़ एक ऐसा भंडार था, जो अनायास ही उनके सामने क्षण भर में हर चीज़ पेश कर देता था । विनोदप्रियता, हास्य-व्यंग्य और छेड़-छाड़ उनके रग-रग में समाया हुआ था ।

छेड़-छाड़ और बिगाड़, जो आजीवन उनके साथ लगा रहा, पर उनका एक मशहूर शेअर देखिए–

अजीब लुत्फ़ कुछ आपस की छेड़-छाड़ में है ।
कहां मिलाप में वह बात जो बिगाड़ में है ।

मतलब यह कि मसख़रापन, हास्य-व्यंग्य और विनोद-प्रियता उनकी ताक़त भी थी और कमज़ोरी भी । इसी ने उन्हें लोकप्रियता के सर्वोच्च शिखर पर बिठाया और बदनामी के गर्त में भी गिराया ।

'इंशा' खड़ी बोली हिन्दी के आरंभिक 'गद्य चतुष्ट्य' के चार लेखकों में से एक थे । अन्य तीन लेखकों के नाम ये हैं–मुंशी सदासुखलाल, लल्लूलाल और सदल मिश्र । हिन्दी में मुंशी सदासुखलाल 'प्रेमसागर', इंशा अल्लाह ख़ां 'रानी केतकी की कहानी', लल्लूलाल 'लालचन्द्रिका' और सदल मिश्र 'नासिकेतोपाख्यान' के लिए विख्यात हैं ।

'इंशा' के पूर्वज अरब के मशहूर इलाक़े नज़फ़ से कश्मीर आये थे और फिर वहां से दिल्ली आकर बस गये थे । उनके पिता माशा अल्लाह ख़ां एक जाने-माने हकीम (वैद्य) थे । मुग़ल दरबार में उन्हें बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त थी । तत्कालीन मुग़ल सम्राट् के आर्थिक संकट में घिर जाने पर हकीम साहब मुर्शिदाबाद के नवाब के यहां चले गये । मुर्शिदाबाद में ही 'इंशा' का जन्म सन् 1756 ई० में हुआ । जब बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला मारे गये और बंगाल में अन्धेर मचा, तब 'इशा', जो पढ़-लिखकर अच्छे विद्वान और प्रतिभाशाली कवि हो चुके थे, दिल्ली चले आ गये और

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शाह आलम द्वितीय के दरबार में रहने लगे । दिल्ली में जब तक रहे, अपनी अद्‌भुत प्रतिभा और कवित्व-शक्ति के बल पर अपने विरोधियों – बड़े-बड़े नामी शायरों – को बराबर धूल चटाते रहे । यहां इनकी योग्यता और काव्य-सर्जन की अदभुत क्षमता का डंका बजता रहा ।[1]

मतलब यह कि 'इंशा' दिल्ली दरबार में जब तक रहे, पूरे दरबार पर छाये रहे, यहां तक कि दरबार के दूसरे शायर अपना रंग उखड़ते देख उनसे ईर्ष्या करने लगे और कविता के मैदान में उनके विरुद्ध घात-प्रतिघात का दौर शुरू हो गया । वे किसी से दबने वाले नहीं थे, हर मौक़े पर सब पर भारी पड़ते थे ।

उर्दू के मशहूर साहित्येतिहासकार डॉ॰ सैयद एजाज़ हुसैन ने दिल्ली के इस रोमांचक साहित्यिक दंगल का मानो आंखों देखा हाल लिखा है–

''एक प्रतिद्वंद्वी दूसरे पर ज़बान की तलवार से हमला करता, दूसरा निन्दा-काव्य के हथियार से आहत करने का प्रयत्न करता, मगर 'इंशा' अल्लाह सब पर भारी पड़ते ।''[2]

'इंशा' को अपनी काव्य-शक्ति और कला पर पूरा विश्वास था । उन्होंने हमेशा अपने प्रतिद्वन्द्वियों की ललकार का जवाब पछाड़ से दिया–

जिसने यारो मुझसे दावा शेअर के फ़न का किया
मैंने ले कर उसके काग़ज़ और क़लम आगे धरा

इसी बीच जब ग़ुलाम क़ादिर बादशाह को अन्धा करके शाही ख़ज़ाना लूटकर चल दिया, तब 'इंशा' का निर्वाह दिल्ली में कठिन हो गया और वे लखनऊ चले गये ।[3]

लखनऊ में मिर्ज़ा सुलैमान शिकोह का दरबार दिल्ली के शायरों की शरण-स्थली था । बाप के दरबार से इंशा अल्लाह ख़ां को आये हुए देखकर मिर्ज़ा शिकोह ने हाथों हाथ लिया और उन्हें अपना उस्ताद बना लिया और 'मुसहफ़ी' की बजाय 'इंशा' से ही अपनी कविताओं में संशोधन करवाने लगे । बादशाह की हरकत से 'मुसहफ़ी' चिढ़ गये और कविता में अपने मन की भड़ास निकालने लगे । उन्होंने 'इंशा' के बारे में यहां तक कह डाला–

वल्लाह कि शायर नहीं है तू, भांड है भड़वे ।

'इंशा' भी उनके पीछे बुरी तरह पड़ गए और नौबत इसपर आ गयी कि दोनों एक-दूसरे के विरुद्ध स्वांग बना-बनाकर जुलूसों में निकलने लगे और भीड़ 'इंशा' के पीछे चलने लगी–

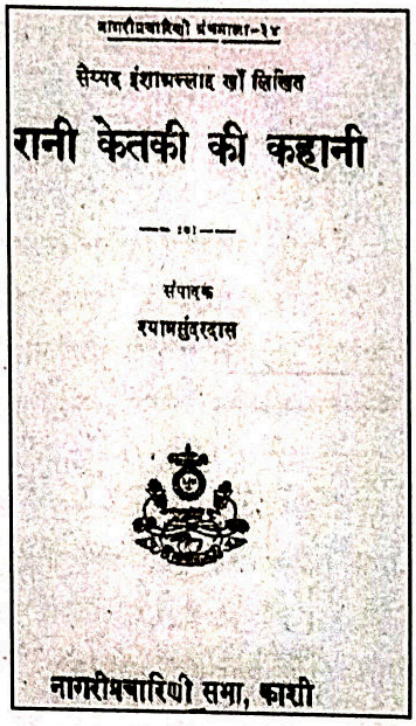

इंशा अल्लाह शायद आया
इस कूचे में भीड़-भाड़ सी है

सुलैमान शिकोह के दरबार के एक सम्मानित विद्वान तफ़ज़्ज़ुल हुसैन ख़ां थे । 'इंशा' उनके पास भी जाया करते थे । उन्होंने तत्कालीन नवाब सआदत अली ख़ां के दरबार में उन्हें पहुंचा दिया ।

सआदत अली ख़ां से पहले 'इंशा' की बहुत पटी । इनकी चुहलें नवाव के मनोरंजन की सामग्री होती थीं । दोनों में बेतकल्लुफ़ी बहुत बढ़ गयी थी । इसी बेतकल्लुफ़ी में इनके मुंह से एक दिन ऐसी बात निकल गयी, जिससे नवाब के दासी-पुत्र होने की ओर भी इशारा होता था । नवाब नाराज़ हो गये और एक दिन बहाना मिलने पर उन्हें दरबार के अलावा और कहीं न जाने का आदेश दे दिया । इससे वह बहुत कुढ़े । इसी अवधि में 'इंशा' का जवान बेटा मर गया, जिसके कारण इनका दिमाग़ क़रीब-क़रीब ख़राब हो गया और इसी दशा में इन्होंने नवाब सआदत अली ख़ां को, जिनकी सवारी उनके घर के सामने से निकल रही थी,

उनके मुंह पर ही भला-बुरा कह डाला । 'इंशा' ने मानो अपने हाथों मधुमक्खी के छत्ते को तोड़ डाला । क्रुद्ध मधुमक्खियां मानो उन पर टूट पड़ीं । नवाब ने महल वापस जाकर इनका वेतन बन्द करवा दिया । इसपर लाचार 'इंशा' की आत्मा ने नवाब से अपनी जांनिसारी का हवाला देते हुए कहा–

'इंशा' से मत रूठ, ख़फ़ा हो
है बन्दा जांनिसार तेरा
नवाब न मानने वाले थे, न माने ।

'आबे-हयात' में 'इंशा' की इस दयनीय दशा का अत्यन्त दर्दनाक चित्रण मौलाना मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद' ने सआदत यार ख़ां 'रंगीन' के वृत्तान्त के आधार पर यों किया है–

''मैं (सआदत यार ख़ां) अन्दर गया । देखा कि एक कोने में (इंशा) बैठे हैं । तन नंगे है, दोनों घुटनों पर सिर धरा है । आगे राख के ढेर पर एक टूटा-सा हुक्क़ा रखा है या तो वह शान व शिकवा कि जमघट देखते थे, वह गरमजोशी और चुहलों की मुलाक़ातें होती थीं या यह अवस्था देखी कि सहसा दिल भर आया । मैं भी वहीं ज़मीन पर बैठ गया और देर तक रोया । जब जी हल्का हुआ, तो मैंने पुकारा तो सैयद इंशा ने सिर उठाकर इस हसरत भरी निगाह से देखा, जो कहती थी कि क्या करूं आंख में आंसू नहीं । मैंने कहा : क्या हाल है ? एक ठंडी सांस भरकर कहा : शुक्र है । फिर इस तरह सिर को घुटनों पर रख लिया कि न उठाया ।''[4]

'इंशा' ने अपनी इसी दर्दनाक दशा का वर्णन शायद अपने इन शेअरों में किया है । इन शेअरों में 'इंशा' मानो अपने दोस्त 'रंगीन' से कह रहे हों–

न छेड़ ऐ निकहते-बादे-बहारी राह लग अपनी
तुझे अठखेलियां सूझी हैं हम बेज़ार बैठे हैं

और अपनी दुर्दशा का हाल अपने दोस्तों तक पहुंचाने का सुबह की पूरबी हवा से अनुरोध करते हुए 'इंशा' कहते हैं–

ऐ बादे-सबा महफ़िले-अहबाब में कहियो
देखा है जो कुछ हाल तहे-दाम हमारा

फलतः 'इंशा' के यहां तंगी और भुखमरी ने डेरा जमा लिया और वही 'इंशा' जिसके दरवाज़े पर हाथी झूमा करते थे और धन- दौलत पहरा दिया करते थे, इसी प्रतिकूल समय और दयनीय दशा में 1817 ई० में परलोक सिधार गये ।

महान शायर

'इंशा' उर्दू और फ़ारसी के बड़े शायरों में से एक हैं । उनकी शायरी काव्य-कला से परिपूर्ण है । उनके विचार और भाव में ताज़गी तथा अभिव्यक्ति और संप्रेषण-शैली में नवीनता पाई जाती है । ऐसी कोई बात न थी जिसे वह शेअर में न कह सकते थे, लेकिन इस योग्यता का उपयोग अच्छी शायरी मे न करके वे मसख़रेपन में लगे रहे । वे मुशायरे में जाते तो एक तरफ़ किसी की तारीफ़ के पुल बांध देते, तो दूसरी तरफ़ किसी का मुंह चिढ़ा देते । उनके बारे में उर्दू के मशहूर शायर फ़िराक़ गोरखपुरी, ने लिखा है–

'''इंशा' बड़े विद्वान पुरुष थे । विनोदप्रियता आवश्यकता से अधिक न बढ़ी होती तो उर्दू कविता के नाम को चमका जाते ।.....उनके काव्य को उनकी अति विनोदी प्रवृत्ति ने बिगाड़ दिया । उनकी समस्त रचनाओं में सरलता, प्रवाह और ओज दिखाई देता है, किन्तु गंभीरता बहुत कम मिलती है । कुछ नज़्में उन्होंने गंभीरतापूर्वक आरम्भ की हैं, किन्तु उनमें भी छिछोरेपन के शोर आ गये हैं ।''[5]

प्रो० सैयद एहतिशाम हुसैन उनकी शायरी के गुण-दोषों पर इन शब्दों में प्रकाश डालते हैं–

''शायर की हैसियत से देखा जाये तो 'इंशा' की गिनती बड़े शायरों में होगी । उनकी कुछ ग़ज़लें कला और अभिव्यक्ति की दृष्टि से गज़ल-तत्त्व से भरपूर हैं । लेकिन अक्सर जगहों पर द्रवणशीलता की कमी है । विचार में

(1)

झूठा निकला क़रार तेरा
अब किसको है ऐतिबार तेरा
दिल में सौ लाख चुटकियां लीं
देखा बस हमने प्यार तेरा
दम नाक में आ रहा था अपने
था रात ये इंतिज़ार तेरा
कर जबर जहां तलक़ तू चाहे
मेरा क्या, इख़्तियार तेरा
लिपटूं हूं गले से आप अपने
समझूं कि है किनार तेरा
'इंशा' से मत रूठ, ख़फ़ा हो
है बंदा जांनिसार तेरा ।

–'इंशा'

ताज़गी और अभिव्यक्ति में नवीनता के बावजूद वह शायरी को जीवन का सर्वोत्तम क्रिया-कलाप न बना सके । उनके ज्ञान के तक़ाज़े क़सीदों में ज़रूर पूरे होते हैं, जहां वह कठिन विषयों, विद्वतापूर्ण विचारों और भारी-भरकम क्रमों से क़सीदे की फ़ज़ा पैदा कर लेते थे । मसनवियों में भी अच्छी परिकल्पनाएं मिलती हैं और काव्य-सर्जन-शक्ति का पता चलता है, लेकिन यह कहना ग़लत न होगा कि उन्होंने शायरी को दरबारी दिलचस्पियों की चीज़ बना दिया । ... अगर दरबार से सम्बद्ध न होते तो शायरी इस तरह पथहीन न होती ।''[6]

'इंशा' के ज्ञान और विद्वता के शायर उर्दू में कम ही होंगे । उनके ज्ञानी और विद्वान होने का पता इससे चलता है कि उन्होंने एक छोटा-सा दीवान (काव्य-संग्रह) ऐसा लिखा है, जिसमें फ़ारसी लिपि का कोई बिन्दी वाला अक्षर प्रयोग में नहीं आया है और एक क़सीदा लिखा है, जो सात भाषाओं में है । उन्होंने कठिन से कठिन छन्दों तथा तुकान्तों में भी ग़ज़लें लिखीं हैं । नयी-नयी तरह की चीज़ें लिखना उनका प्रिय कार्य था । उनके 'कुल्लियात' में ग़ज़लों के अलावा मसनवियां, क़सीदे, क़तआत, मंज़ूमात इत्यादि मौजूद हैं ।

उर्दू के साहित्येतिहासकार डॉ॰ सैयद एहतिशाम हुसैन ने लिखा है–

''इंशा अल्लाह ख़ां के 'कुल्लियात' के अध्ययन से मालूम होता है कि दरबारी संस्कृति और हास्य (हंसोड़पन) ने उनकी शायरी की कई सतहें बना रखी थीं । गंभीरता और विचार है, तो सतह ऊंची है, हंसोड़पन और छेड़-छाड़ है तो नीची ।''[7]

स्त्रियों की बोलचाल की भाषा में कविता

अपने मित्र सआदत यार ख़ां 'रंगीन' के आविष्कार 'रेख़्ती' (स्त्रियों की बोलचाल की भाषा में कविता) को उन्होंने न केवल शौक़ से अपनाया, बल्कि इतना विस्तार दिया कि कुछ लोग भ्रमवश 'रेख़्ती' को 'इंशा' का ही आविष्कार समझने लगे ।''[8]

यहां 'इंशा' के कुछ मशहूर शेअर प्रस्तुत हैं । इन्हें देखिए और विचार कीजिए कि वे काव्य-कला और भाव-पक्ष की दृष्टि से कितने उच्च स्तर के हैं–

चालाक लोग अपनी चालाकी छिपाने और दुनिया को दिखावे के लिए लोगों की मदद करते हैं, उनपर मेहरबानी करते हैं । ऐसे लोगों की रूखी-सूखी मेहरबानी न लेने का साहस 'इंशा' ने अपने इस शेअर में दिखाया है, हांलाकि ऐसा बहुत कम लोग ही कर पाते हैं–

ले के मैं ओढ़ूं, बिछाऊं, लपेटूं क्या करूं ?
रूखी-फीकी, सूखी-साखी मेहरबानी आपकी ।

'इंशा' को ऐसे इन्सानों पर हंसी आती है जो ग़लतियां ख़ुद करते हैं और शैतान के गले मढ़ते हैं, बुरे कर्म तो ख़ुद करते हैं और लानत शैतान पर भेजते हैं–

क्या हंसी आती है मुझको हज़रते-इन्सान पर
फ़ेले-बद ख़ुद ही करें लानत करें शैतान पर

बुराई को भलाई से मिटाना इस्लामी कर्म है । यह कर्म 'इंशा' जैसे कुछ लोग ही कर पाते हैं–

ख़याल कीजिए क्या आज काम मैंने किया
जब उनने दी मुझे गाली, सलाम मैंने किया

बड़े शायर अपनी रचना में बड़ी कुशलता से लौकिक और पारलौकिक प्रेम दोनों को चित्रित कर देते हैं । इसका पता लगाना सामान्य पाठकों के बूते की बात नहीं होती कि इसमें लौकिक प्रेम का वर्णन हुआ है या पारलौकिक प्रेम का । 'इंशा' का ऐसा ही एक मर्मस्पर्शी द्विपदी देखिए–

जो घड़ी याद में तिरी कट जाए
वो ही आठों पहर की पूंजी है

प्रेम बड़ा बलशाली है । इससे ईश-सिंहासन भी हिल जाता है–

धूम इतनी तिरे दीवाने मचा सकते हैं
कि अभी अर्श को चाहें तो हिला सकते हैं

प्रेम इन्सान को अमर बना देता है और प्रेमाग्नि में तपकर इन्सान कुन्दन बन जाता है । आशिक़ और मशूक़ एक हो जाते हैं, एक-दूसरे में विलीन । 'इंशा' इस तथ्य को इन शब्दों में अभिव्यक्त प्रदान करते हैं–

ज़मीं से उठी है या चर्ख़ पर से उतरी है
ये आग इश्क़ की या रब किधर से उतरी है

'इंशा' कहते हैं कि अगर आपका प्रेम-भाव निश्छल और निर्मल है, तो आपके चाहने वाले प्रेम के कच्चे धागे में भी बन्धे चले आएंगे–

जज़्बा-ए-इश्क़ सलामत है तो इंशा अल्लाह
कच्चे धागे से चले आएंगे सरकार बंधे

'इंशा' जब रोमांस के मूड में होते हैं तो कहते हैं–

लगी है मेंह की झड़ी बाग़ में चलो झूलें
कि झूलने का मज़ा अभी इस बहार में है

अगर किसी का अपना (प्रियतम) किसी पराये के हाथ से पान खाता है और पराये के साथ हंसी-ठट्ठा करता है तो स्वभावतः उसका ख़ून खौल उठता है, लेकिन लोक-लाज के भय से वह चुप रह जाता है, ख़ून का घूंट पीकर रह जाता है। अपने की इस विवशता का सजीव चित्रण 'इंशा' के इस शेअर में देखिए–

पान जो हाथ से कल ग़ैर के तू ने खाया
पी के लहू को ग़रज़ घूंट रहे हम ज्यूं पीक

हिन्दू देवी-देवताओं का रोमांकारी चित्रण भी 'इंशा' के काव्य में मिलता है। वे कहते हैं कि शिवा जी के गले से पार्वती जी के लिपटने की वजह से ब्रह्लोक में बसन्त की-सी छटा छा गई। उनके प्रेमालाप का रोमांचकारी चित्रण पाठकों के तन-मन को रोमांचित कर देता है–

शिव के गले से पार्वती जी लिपट गयीं
क्या ही बहार आज है ब्रह्मा के रुण्ड पर

श्याम सलोने श्रीकृष्ण की रूप-माधुरी का अत्यन्त चित्ताकर्षक वर्णन 'इंशा' इन शब्दों में करते हैं–

सांवले तन पे ग़ज़ब धज है बसंती शाल की
जी में है कह बैठिए अब जय कन्हैया लाल की

और राधा के कुण्ड पर बैठे महन्त का मनोहर चित्रण देखिए–

ये जो महन्त बैठे हैं राधा के कुण्ड पर
अवतार बनके गिरते हैं परियों के झुण्ड पर

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'इंशा' का काव्य बहुआयामी, विविधतापूर्ण और काच्य-कला से परिपूर्ण है। इसका फलक अत्यन्त व्यापक है, जो तत्कालीन समाज और दरबारी संस्कृति का दर्पण अर्थात् 'इंशा' का काव्य उनके समकालीन समाज और संस्कृति का यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत करता है।

इन्सान ग़लतियों का पुतला है, अगर वह ग़लती नहीं करता तो फ़रिश्तों के समकक्ष ठहरता। इसलिए 'इंशा' के काव्य में बहुत-सी ख़ूबियों के बावजूद कुछ ख़ामियां भी हैं।

रानी केतकी की कहानी

यह एक लौकिक अमर प्रेम कहानी है। 'इंशा' ने सन् 1904 ई॰ में खड़ी बोली में और फ़ारसी लिपि में इसकी रचना की। यह एकमात्र कहानी है, जिसे हिन्दी-उर्दू दोनों वाले अपनी भाषा की रचना मानते हैं। हिन्दी-उर्दू दोनों में इसका ऐतिहासिक महत्त्व है।

(2)

बस्ती तुझ बिन उजाड़ सी है
कमबख़्त ये शब पहाड़ सी है
शायद कि हुई सरायते-इश्क़
कुछ सीने में चीर-फाड़ सी है
हरचंद कि बोलते नहीं वो
बाहम पर छेड़-छाड़ सी है
सो रहते हैं एक साथ लेकिन
तलवार के बीच आड़ सी है
इंशा अल्लाह शायद आया
इस कूचे में भीड़-भाड़ सी है

–'इंशा'

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'इंशा' ने इस कहानी में कुछ ठेठ खडी बोली के पद्य भी उर्दू छन्दों में रखे हैं। बाबू श्यामसुन्दर दास ने इसे 'हिन्दी की प्रथम कहानी' और चन्द्रबली पाण्डेय ने उर्दू कहानी माना है। आचार्य शुक्ल इसे लम्बी कहानी के अन्तर्गत रखते हैं, जबकि डॉ॰ कुसुम राय ने इसे 'लघु उपन्यास' कहा है और डॉ॰ सैयद अब्दुल बारी ने इसे 'उर्दू की संक्षिप्ततम गाथा (दास्तान)' कहा है। उर्दू के दूसरे साहित्येतिहासकारों ने इसे उर्दू-कहानी ही माना है।

सैयद एजाज़ हुसैन ने 'रानी केतकी की कहानी' को विशुद्ध उर्दू भाषा की कहानी माना है। उन्हीं के शब्दों में–

"....दूसरी किताब की भाषा उर्दू है, जिसका नाम 'रानी केतकी कहानी' है। इसमें यह प्रयास किया गया है कि अरबी-फ़ारसी का एक शब्द भी न आने पाये। यह विशुद्ध उर्दू का एक अच्छा नमूना है।"

'इंशा' की गद्य-रचनाओं का उल्लेख करते हुए सैयद एहतिशाम हुसैन ने भी लिखा है कि 'रानी केतकी की कहानी' उर्दू की गद्य-रचना है–

'दरिया-ए-लताफ़त' और 'लतायफुल-सआदत' फ़ारसी

गद्य में और 'रानी केतकी की कहानी' और 'सिल्के-गुहर' उर्दू गद्य में मौजूद हैं ।'[6]

डॉ॰ कुसुम राय लिखती हैं कि 'इंशा' 'रानी केतकी की कहानी' में अरबी, फ़ारसी, तुर्की, गंवारी अर्थात् ब्रजभाषा, अवधी और संस्कृत शब्दों के मेल से अपनी भाषा को दूर रखना चाहते थे–

''बाहर की बोली अर्थात् अरबी, फ़ारसी, तुर्की, गंवारी अर्थात् ब्रजभाषा, अवधी और भाखापन अर्थात् संस्कृत शब्दों के मेल से अपनी भाषा को दूर रखना चाहते थे । प्रारम्भिक गद्य लेखकों में शुक्ल जी ने उनकी भाषा को सबसे चटकीली, मुहावरेदार और चलती बताया है, जिसमें फ़ारसी ढंग के वाक्य-विन्यास कहीं-कहीं प्रयुक्त हुए हैं ।'[7]

विजयेन्द्र स्नातक ने 'इंशा'-रचित 'रानी केतकी की कहानी' की रचना-कला की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखा है–

''इन्होंने 'रानी केतकी की कहानी' भी बिना किसी तात्कालिक उद्देश्य से प्रेरित होकर सुबोध तथा रोचक भाषा में लिखी । अरबी-फ़ारसी के वातावरण–लखनऊ–में रहते हुए भी हिन्दीपन से रंगी हुई चुलबुली भाषा में सफलतापूर्वक गद्य लिखा । 'रानी केतकी की कहानी' न केवल शब्द भंडार में वरन् भावों की दृष्टि से भी प्रौढ़ एवं चटकीली भाषा का रूप उपस्थित करती है ।'[8]

आचार्य शुक्ल ने 'इंशा' द्वारा 'रानी केतक की कहानी' का आरंभ मनोरंजक ढंग से करने के बारे में लिखा है कि अपनी कहानी का आरम्भ ही उन्होंने इस ढंग से किया है जैसे लखनऊ के भांड घोड़ा कुदाते हुए महफ़िल में आते हैं।

उन्होंने कहा है कि इंशा अल्लाह ख़ां दूसरे लेखक हैं, जिन्होंने हिन्दी गद्य-निर्माण में विशेष योगदान दिया है । वे लल्लूलाल और सदल मिश्र के समसामयिक थे, पर 'रानी केतकी की कहानी' लाल और मिश्र की रचनाओं से पहले लिखी जा चुकी थी । 'रानी केतकी की कहानी' लखनऊ में लिखी गई । इसे लिखने के कारण पर स्वयं 'इंशा' ने इन शब्दों में प्रकाश डाला है–

''एक दिन बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिन्दवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जा के मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले । बाहर की बोली और गंवारी कुछ उसके बीच में न हो । अपने मिलने वालों में से एक कोई बड़े पढ़े-लिखे पुराने-धुराने डांग बूढ़े घाग यह खटराग लगा लाए–लगे कहने यह बात होते दिखाई नहीं देती । हिन्दवीपन भी न निकले और भाखापन न हो । बस, भले लोग अच्छों से अच्छे आपस में बोलते-चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे औ छांव किसी की न हो, यही नहीं होने का ।'[9]

इससे स्पष्ट है कि 'इंशा' का उद्देश्य ठेठ हिन्दी लिखने का था, जिसमें हिन्दी को छोड़कर और किसी बोली का पुट न रहे ।[10]

विषय की दृष्टि से भी इस कृति का महत्व स्मरणीय है । इसके माध्यम से सर्वप्रथम खड़ी बोली गद्य में लौकिक प्रेम की कहानी कही गई है, जो खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू की अमर प्रेम कहानी है ।

यहां यह उल्लेखनीय जान पड़ता है कि उर्दू के साहित्येतिहाकारों ने इसका उल्लेख केवल 'रानी केतकी कहानी' के रूप में किया है, जबकि हिन्दी साहित्येतिहासकारों ने 'उदयभान चरित' अथवा 'रानी केतकी की कहानी' के नाम से किया है । उर्दू वालों ने इसे उर्दू भाषा की कहानी कहा है, जबकि हिन्दी वालों ने हिन्दी भाषा की कहानी ।

पहले के रचकाकार अपनी रचना के आरम्भ में ईश-वन्दना अवश्य करते थे । 'इंशा' ने भी इस परम्परा का पालन करते हुए लिखा है–

''सर झुकाकर नाक रगड़ता हूं, अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सबको बनाया ।''[11]

इस कहानी का महत्त्व भाषा, शैली और वर्ण्य वस्तु सभी दृष्टियों से है । लेखक ने इसको मुअल्लापन (पुरानी उर्दू) के साथ ही ब्रजभाषा, अवधी और संस्कृत के तत्सम शब्दों को भी अलग रखना चाहा है । यह कहानी शुद्ध लौकिक प्रेम को आधार बनाकर पाठकों के मनोरंजन के लिए लिखी गयी है ।

अन्त में डॉ॰ बच्चन सिंह के शब्दों में यही कहा जा सकता है कि '''इंशा' ने शिष्टजनों की बोलचाल की भाषा में, जिसमें न तो संस्कृत प्रभाव था, न अरबी-फ़ारसी का, 'रानी केतकी की कहानी' लिखी ।''[12]

उर्दू के मशहूर शायर फ़िराक़ गोरखपुरी हिन्दी-उर्दू दोनों

भाषाओं में इस कहानी का ऐतिहासिक महत्त्व प्रतिपादित करते हुए लिखा है–

''फ़ारसी और अरबी के प्रकाण्ड विद्वान थे और भारत की कई भाषाओं पर भी उन्हें अधिकार प्राप्त था । यही नहीं भाषा पर ऐसा अधिकार था कि देशज शब्दों में ही एक पूरी पुस्तक 'रानी केतकी की कहानी' लिख गये, जिसका हिन्दी तथा उर्दू दोनों में ऐतिहासिक महत्त्व है । इस कहानी में संस्कृत, अरबी या फ़ारसी का एक भी शब्द नहीं है ।''[13]

इसमें संदेह नहीं कि 'इंशा' की भाषा गद्य-चतुष्ट्य के लेखकों में सबसे अधिक चलती हुई और मुहावरेदार है । तत्कालीन किसी भी लेखक ने इतनी साफ़-सुथरी खड़ी बोली का इस्तेमाल नहीं किया । जैसे अमीर ख़ुसरू की कविताओं में वर्तमान खड़ी बोली का निकटतम और निखरा हुआ रूप मिलता है, वैसे ही 'इंशा' की 'रानी केतकी की कहानी' खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू का सुन्दर नमूना है । ऐसा माना जाता है कि भाषा चंचल-चपल सरिता की भांति काल-प्रवाह में अपना मार्ग परिवर्तित करती हुई सतत् आगे बढ़ती एवं कालानुकूलित होती रहती है । इसी लिए 'रानी केतकी की कहानी' की भाषा को ख़ुसरू की कविता की भाषा की अगली कड़ी के रूप में देखा सकता है । इसमें हम खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू गद्य का पूर्णतः पूर्वाभास पाते हैं । हां, उर्दू-फ़ारसी भाषाओं का महान रचनाकार होने के कारण 'इंशा' का झुकाव उर्दू की ओर अधिक है ।

वस्तुतः 'इंशा' अपनी प्रवाहमयी, मनोरंजक और हास्यपूर्ण वर्णन-शैली, चटपटी और लच्छेदार काव्यावली तथा विशुद्ध खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू लेखन के साहसिक प्रयोग के कारण हिन्दी-उर्दू-गद्य-साहित्य के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेंगे ।

अनेक भाषाओं के ज्ञाता

'इंशा' न सिर्फ़ उर्दू-हिन्दी-फ़ारसी के विशेषज्ञ थे, बल्कि कई अन्य देशज-विदेशज भाषाओं जैसे तुर्की, पश्तो, अरबी, पंजाबी, कश्मीरी, मारवाड़ी, ब्रज, अवधी, बंगला के भी ज्ञाता थे । कभी-कभी अंग्रेज़ी शब्द भी इस्तेमाल करते थे । उनकी रचनाएं देखने से ज्ञात होता है कि भाषाई सामर्थ्य और कौशल उन्हें प्राप्त था । मुहावरों पर उनकी हुक्मरानी चलती थी ।

(3)

तू ने लगाई अब की ये क्या आग, ऐ बसंत
जिससे कि दिल की आग उठे जाग, ऐ बसंत
कैफ़ियते-बहार के तू उस को दे ख़बर
मौजे-नसीम की तरह उड़ लाग, ऐ बसंत
हर शाख़ ज़र्दो-सुर्ख़ो-सियह हिज्रे-यार में
डसते हैं दिल को आन के जूं नाग, ऐ बसंत
जूं तारे-चंग छेड़ न 'इंशा' को बात में
तेरा सुना हुआ है ये घटराग, ऐ बसंत ।

–'इंशा'

डॉ॰ सैयद एजाज़ हुसैन लिखते हैं–

'''सौदा' की तरह 'इंशा' का रुझान फ़ारसी, अरबी के अलावा हिन्दी की तरफ़ भी था । इस मामले में वह यक़ीनन 'सौदा' से बढ़े हुए थे । यही नहीं कि हिन्दी कविता और गूढ़ शब्द प्रयोग करते हों, बल्कि इस मामले में इतनी अधिक दक्षता प्राप्त थी कि छन्दों और विभिन्न प्रकार की कविताओं का नाम अरबी से बदल कर हिन्दी में करना चाहते थे । इसी लिए 'मुसल्लस' का नाम 'नकड़ा' और 'मुरब्बा' का 'चौकड़' रखा था । ...इसी तरह तर्कशास्त्र के अनेक शब्द भी हिन्दी में निर्मित किए । ...कभी किसी शब्द या मुहावरे की शुद्धता के बारे में उनसे प्रमाण मांगा जाता तो शब्दकोशों और उस्ताद शायरों के काव्य से फ़ौरन नमूना पेश कर देते ।''[14]

'इंशा' की भाषा मुहावरेदार और चलती हुई है । ठेठ घरेलू शब्दों के प्रयोग के कारण वह बड़ी प्यारी लगती है । उनमें सानुप्रास विराम देने की प्रवृत्ति अधिक है । इन्होंने पुरानी उर्दू के अनुकरण पर कृदन्तों और विशेषणों में भी बहुवचन सूचक चिह्न लगाये हैं । 'इंशा' ने जगह-जगह बड़ी प्यारी घरेलू ठेठ खड़ी बोली का व्यवहार किया है । इनकी चलती-चटपटी भाषा का नमूना देखिए–

''इस बात पर पानी डाल दो नहीं तो पछताओगी और अपना किया पाओगी । मुझसे कुछ न हो सकेगा । तुम्हारी जो कुछ अच्छी बात होती तो मेरे मुंह से जीते जी न निकलती, पर यह बात मेरे पेट नहीं पच सकती । तुम अभी अल्लड़ हो, तुमने अभी कुछ देखा नहीं । जो ऐसी बात पर

सचमुच ढलाव देखूंगी तो तुम्हारे बाप से कहकर वह भभूत जो वह मुआ निगोड़ा भूत, मुछन्दर का पूत अवधूत दे गया है, हाथ मुरकवाकर छिनवा लूंगी ।''

कहीं रोचकता के लिए तुकान्त गद्य का भी प्रयोग किया गया है–

''आतियां-जातियां जो सांसें हैं । उसके बिन ध्यान यह सब फांसें हैं...घरवालियां जो किसी डौल से बहलातियां हैं ।''

'कुंजनियां', 'रामजनियां', 'डोमिनियां' के साथ वे 'धूम-मचातियां', 'अंगड़ातियां' और 'जम्हातियां' इत्यादि शब्दों का प्रयोग 'इंशा' ने 'रानी केतकी की कहानी' में किया है । लेकिन अब खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू में इस प्रकार के प्रयोग नहीं चलते ।

'इंशा' की रचनाएं

(1) दीवाने-उर्दू, (2) दीवाने-फ़ारसी, (3) उर्दू क़सीदे, (4) फ़ारसी क़सीदे, (5) फ़ारसी की दो मसनवियां, जिनमें से एक बिन्दुरहित अक्षरों में लिखी गयी है और दूसरी (6) 'शीर विरंज', जिसमें सूफ़ी आध्यात्मवाद का मज़ाक़ उड़ाया गया है, (7) एक अरबी मसनवी का 'मायतुल-अमल' के नाम से फ़ारसी में अनुवाद, (8) उर्दू मसनवी 'शिकारनामा' (9) उर्दू मसनवी 'शिकायते-ज़माना', (10) दो मनोरंजक उर्दू मसनवियां जिनमें से एक में मुर्ग़ों की लड़ाई का वर्णन है और दूसरी में एक हाथी और हथिनी के विवाह का क़िस्सा है, (11) निन्दात्मक मसनवियां जिनमें 'मुसहफ़ी' और दुकानदारों से लेकर गर्मी, बर्रों, खटमल, मच्छर, मक्खी आदि सभी को कोसा गया है, (12) रानी केतकी की कहानी, (13) दरिया-ए-लताफ़त, (14) 'इंशा' की तुर्की डायरी 15. सिल्के-गुहर (16) दीवाने-रेख़्ती (17) और कुल्लियाते-इंशा, 18. कलामे-इंशा इत्यादि ।

'इंशा' ने गद्य में 'दरिया-ए-लताफ़त' (फ़ारसी), -रानी केतकी कहानी' (उर्दू), 'सिल्के-गुहर' (उर्दू), 'लताइफ़े-सआदत' (फ़ारसी) और 'तुर्की रोज़नामचा' (डायरी) कुल पांच रचनाएं कीं ।[15]

सैयद एहतिशाम हुसैन ने 'दरिया-ए-लताफ़त' को 'इंशा' की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना माना है । वे कहते हैं–

'''इंशा' की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना 'दरिया-ए-लताफ़त' है, जो भाषाविज्ञान और दूसरे महत्वपूर्ण साहित्यिक विषयों का एक ख़ज़ाना है । इसके अध्ययन से उस उर्दू भाषा का परिचय मिलता है, जो विभिन्न इलाक़ों और वर्गों में विभिन्नि रूपों में प्रचलित थी । इसमें भाषा के दिलचस्प नमूने भी हैं ।''[16]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी और बहुभाषाविद इंशा अल्लाह ख़ां 'इंशा' अपने विलक्षण लेखन के द्वारा हिन्दी-उर्दू और फ़ारसी साहित्य के इतिहास में अमर हो गये । यदि वे केवल 'रानी केतकी की कहानी' ही लिखते और कुछ नहीं लिखते, तो यही एक कहानी उन्हें अमर बनाने के लिए पर्याप्त होती ।

संदर्भ

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, 38वां संस्करण, संवत् 2057 वि॰, पृ॰ 73
2. तारीख़े-अदब उर्दू, संस्करण : दिसम्बर 1964 ई॰, पृ॰ 73
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, 38वां संस्करण, संवत् 2057 वि॰, पृ॰ 73
4. मुख़्तसर तारीख़े-अदब उर्दू, डॉ॰ सैयद एजाज़ हुसैन, संस्करण : दिसम्बर 1964 ई॰, पृ॰ 73
5. वही, पृ॰ 73-74
6. उर्दू अदब की तंक़ीदी तारीख़, क़ौमी कौंसिल बराये फ़रोग़ उर्दू ज़बान, नई दल्ली, तीसरा एडीशन, 1997 ई॰, पृ॰ 90
7. हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, द्वितीय खण्ड, विश्वविद्यायल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 2017 ई॰, पृ॰ 26
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पुनमुद्रण 2916 ई॰, पृ॰ 185
9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ॰ 396
10. वही, पृ॰ 284
11. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ॰ 397
12. वही, पृ॰ 50
13. उर्दू भाषा और साहित्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, तृतीय संस्करण : 2004 ई॰, पृ॰ 57
14. मुख़्तसर तारीख़े-अदब उर्दू, संस्करण : दिसम्बर 1964 ई॰, पृ॰ 73
15. लखनऊ का शेअरो-अदब, डॉ॰ सैयद अब्दुल बारी, अल-फ़लाह पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-110025, प्रथम संस्करण 1996 ई॰, पृ॰ 525
16. उर्दू अदब की तंक़ीदी तारीख़, क़ौमी कौंसिल बराये फ़रोग़ उर्दू ज़बान, नई दिल्ली, तीसरा एडीशन, 1997 ई॰, पृ॰ 90, 91

हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–"उस पर अल्लाह की रहमत हो जो बेचने, ख़रीदने और दावा करने में दयालुता से काम लेता है ।"

(बुख़ारी)

A Well Wisher

GANGAPUR

(RAJ.)

पछतावा

■ इब्ने फ़रीद

संयोगवश मुझे उस नगर में एक ऐसे मकान में ठहरना पड़ा, जिसकी ऊपरी मंज़िल में तो मैं रहता था, पर निचली मंज़िल के एक भाग में गुज़री मेहतरानी अपने दो बच्चों के साथ किसी प्रकार जीवन के दिन काट रही थी ।

वैसे गुजरी मेहतरानी की आयु पैंतीस के आसपास ही थी । लेकिन वह आज चार वर्ष से विधवा थी । उसके दोनों बच्चों की आयु बारह और आठ के लगभग थी । पति की मृत्यु के बाद उसके बहुत से नातेदारों ने उसे विवाह पर काफ़ी उभारने की कोशिश की, पर वह हर ऐसे अवसर पर अपने दोनों बच्चों पर नज़रें गाड़ देती और कहती–''बाबू ! मुझे क्या लेना-देना, मरने के दिन आए, यही दो बच्चे हैं, भगवान इन्हें जीवित रखें, किसी प्रकार दिन काट ही लूंगी' और वे अपना-सा मुंह लेकर रह जाते ।

जिस दिन हम लोग उस मकान में उतरे, उसके दूसरे दिन ही गुजरी दबे पैरों आंगन तक चली आयी । ''बाबू जी सलाम !'' यही उसके शब्द थे जो सर्वप्रथम मेरे कानों में गूंजे । उसके पीछे उसका छोटा लड़का उससे लिपटा खड़ा था । उसने उसे ज़ोरों से सामने खींच लिया और मेरी ओर संकेत करते हुए कहा–''हूंह ! देख बाबू जी !! नये-नये !!!'' और वह फिर शर्म के कारण मां की आड़ में चला गया ।

''क्या काम है ? कैसे आयी ?'' मैंने उदासीनतापूर्वक उससे कुछ प्रश्न पूछ लिए ।

''कुछ नहीं बाबू जी । बस ऐसे ही आ गयी !!'' उसने साड़ी के आंचल को सिर पर डालते हुए कहा जो सरक कर कंधे पर आ रहा था ।

मैंने उसके इस उत्तर पर कोई विशेष ध्यान न दिया और दालान में बिखरे सामानों को ठीक-ठाक करने और उन्हें उनके उचित स्थान पर सजाने में लग गया । श्रीमती जी भी मेरे इस काम में मेरा हाथ बटा रही थीं । कोमल अपनी किताबों से खेल रहा था और कल्पना पालने में पड़ी अंगूठा मुंह में दबाए ''गों गों'' करने में मस्त थी ।

''बाबू जी'' उसने अपने लड़के को झिड़कते हुए कहा जो उस समय मालूम नहीं किस वस्तु के लिए हठ बांध रहा था । मैं उस समय कमरे में दाख़िल हो चुका था, इसलिए उसकी इस पुकार का उत्तर न दे सका ।

''क्या है जी ?'' श्रीमती जी ने डांटते हुए कहा ।

''आशा ! तनिक क़ायदे से बातें करो । मालूम नहीं ग़रीब किस काम से आई है ।–मैं उस समय तक बाहर आ चुका था ।

''देखिए न ! कब से खड़ी है कुछ कहती भी नहीं और बाबू जी, बाबू जी की रट लगाए हुए है'' आशा क्रुद्ध हो उठी ।

''जाओ, अगर कोई काम हो तो बता दो, नहीं तो जाओ ।'' मैंने गुजरी के निकट पहुंचकर नम्रतापूर्वक कहा ।

''यही बाबू जी कि–आपके यहां कौन कमाएगा ?''

''अभी तक कुछ निश्चित नहीं हुआ है ।''

''मैं यहीं निचली मंज़िल में रहती हूं, रात में आऊंगी ।'' और वह पीछे को मुड़ गयी ।

''मैं फिर बताऊंगा''–और वह जा चुकी थी । रात में गुजरी को सूचित कर दिया गया कि वही आकर कमाए और दूसरे दिन से उसने अपना काम आरंभ कर दिया ।

आशा के स्वभाव के चिड़चिड़ेपन से मैं पहले से भी परिचित था और यह भली-भांति जानता था कि वह पिछड़ी जातियों व नीच लोगों से हार्दिक द्वेष रखती है और यह तो उसकी घुट्टी में दाख़िल है, पर यहां आने के बाद मेहतरानी के साथ उसका जो व्यवहार था, वह मेरे लिए दुखदाई भी था और चिंताजनक भी । वह बेचारी परेशान थी आशा के हाथों । कमाने के समय के अलावा वह जब भी कभी आंगन में पैर रखती, आशा आवेश में आ जाती । वह ज़ोर से चिल्लाती ।

''रानी जी ! अगर कुछ हो तो दे दिया जाए ।'' वह विनम्रतापूर्वक कहती ।

''तुम्हारे बाप पकाकर रख गये हैं क्या–? दुष्ट कहीं की, जब देखो आ मौजूद होती है''–वह बड़बड़ाती रहती,

यहां तक कि गुजरी जा चुकी होती ।

एक दिन मैं जैसे ही घर में घुसा मेरा स्वागत आशा ने इन शब्दों में किया–"देखिए आप मूई गुजरी को सख़्ती से मनाकर दीजिए । समय कुसमय घर में घुस आती है ।"

"तो आने दो, इससे क्या ?"

"कितनी गन्दी है–रूप तो देखिए, बाल उलझे और बिखरे हुए–साड़ी पर मैल-कुचैल इतना जमा हुआ है कि विचार से उबकाई आने लगे । सुना है, कमाने के बाद नहाती भी नहीं, कामचोर–जो पहनकर कमाती है वही बाद में पहने ही रह जाती है ।"

मैं भीतर कमरे में प्रवेश कर चुका था और आशा बड़बड़ा रही थी । मैंने उसकी बातों को कोई विशेष महत्व नहीं दिया, इसलिए कि मैं जानता था कि आशा उस घराने की आमजा है जहां ऊंच-नीच, जात-पात का भेदभाव चरम सीमा को पहुंचा हुआ है । पिछड़ी जातियों से अलग रहना, उससे घृणा करना, उनकी गतिविधि पर पाबन्दी लगा देना वहां का सामान्य चलन है ।

"डाइन है डाइन, अगर कुछ हो गया तो ?" और वह अब तक बके जा रही थी ।

"आख़िर अपने जैसे एक व्यक्ति से इतनी घृणा क्यों ?" मैंने झुंझला कर अपने दिल की बात कह दी ।

"तो आप करें उस दृष्टनी से प्रेम, मैं तो मुंह लगाने की नहीं" और वह मुझ पर बरस पड़ी । मैं आशा का मूड ख़राब देखकर कोमल की ओर आकृष्ट हो गया, जो उस समय भी अपनी किताबों से ही खेल रहा था ।

"बेटे आज क्या पढ़ा ?–लाओ देखूं तो तुम्हारी किताब !" और वह दौड़ता हुआ मेरी गोद में आ बैठा ।

"यह देखिए, आज यह पढ़ा–'अ' से 'अनार', 'आ' से 'आम', और वह झूम-झूमकर सुना रहा था–'इ' से 'इमली', 'ई' से 'ईख' ।

आशा शांत हो चुकी थी, अतएव मैंने कोमल को चाय मांगकर लाने के लिए आशा के पास भेजा ।

दूसरे दिन घर में घुसा तो कल्पना रोती-चिल्लाती हुई मिली, वह बराबर रोए जा रही थी और आशा उसे बहला रही थी ।

"क्या हो गया, इसे ?" मैंने आंगन में क़दम रखते ही पूछा । "होगा क्या ? वही गुजरी की नज़र है । वह गुस्से से लाल-पीली हो रही थी–"बार-बार उसे मना किया कि कल्पना के पालने के पास मत जाया कर, किन्तु वह 'रानी जी, रानी जी' कहती हुई पहुंच ही जाती है, लेकिन डाइन ! सोचती नहीं कि उसका कल्पना तक पहुंचना उसके लिए कितना क्षतिवर्द्धक है ।" आशा बड़बड़ा रही थी, "देखिए ! जब से हम लोग इस घर में आये हैं और गुजरी आने-जाने लगी है, बच्चे बीमार रहते हैं ।"

"हूंह ! दुनिया के बच्चे बीमार होते हैं तो क्या हर जगह गुजरी ही रहती है ?"

"रहती हो या न रहती हो" उसने तनते हुए कहा–"पर यहां तो मुझे गुजरी सरीखी डाइन ही से वास्ता पड़ा है । देखिए ! अभी परसों ही की बात है कोमल के पेट में बुरी तरह दर्द था । आप तो समझे, उसने चाट खा ली है और यह उसी का फल है, पर वास्तव में बात यह थी कि दोपहर में खाते समय गुजरी आ धमकी थी और कोमल को खाते हुए बड़े ध्यान से देख रही थी । फिर वही हुआ जिससे मुझे डर था यानी उसे खाने पर नज़र लग गयी ।" उसके इस तर्क पर मुझे हंसी आ गयी, मनुष्य भी कितना शक्की होता है और फिर आशा का नम्बर तो सबसे बढ़कर है । उसे जगह-जगह शक और स्थान-स्थान पर भ्रम हो जाता है । कल्पना पर ऋतुओं की अदला-बदली का प्रभाव हो तो गुजरी की नज़र अगड़म-बगड़म चीज़ें खा लेने पर कोमल का पेट दर्द करे तो भी गुजरी की नज़र–मानो गुजरी की नज़र बन्दूक़ की गोली है जिसे वह मेरे बच्चों पर निशाना बनाती रहती है और वे घायल होकर तड़पने लगते हैं । आशा के शकों व भ्रमों की हद है, कोई । मैं विचारों का ताना-बाना ही बना रहा था कि गुजरी आ गयी ।

"बाबू जी ! लालू की हालत बहुत ख़राब है । बाबू जी ! तनिक–।" और वह रोने लगी । आंसुओं की झड़ी लग गयी उसकी आंखों में ।

"क्या हो गया उसे ?–घबराओ नहीं, क्या हो गया उसे ?" मैंने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा ।

"बाबू जी ! मालूम नहीं क्या हो गया है–आंखें उलट गयीं हैं बाबू जी ! और–और–!" वह फूट-फूटकर रोने लगी । मैं जल्दी से उठ खड़ा हुआ । डॉक्टर को बुलाया । उसने कोई तेज़ दवाई पिलाई और तुरंत ही फ़ायदा दिखायी पड़ने लगा । डॉक्टर की जांच के अनुसार उसे तेज़ निमोनिया हो गया था पर डॉक्टर ने इत्मीनान दिलाया कि शीघ्र ही ठीक हो जाएगा और चला गया ।

वापसी में आशा ने पूछ ही लिया–"क्या हो गया था, लालू को ?"

"तेज़ निमोनिया !–काफ़ी ख़तरनाक हालत थी !!"

"रही होगी ! मुआ मर जाता तो अच्छा था । मेरा कोमल तो उसकी संगति से बच जाता । हर समय उसी के साथ खेलता रहता है ।"

"आशा ! ऐसा न कहो", मेरे मनको ठेस-सी लगी "अगर तुम्हारे कोमल को कोई ऐसा ही कहे तो फिर...?"

"उसका मुंह नोच लूंगी !" उसने ज़ोर से चीखते हुए कहा ।

"तो फिर ऐसे ही समझो । प्रत्येक व्यक्ति को उसका अपना बच्चा तमाम बच्चों से प्यारा होता है, भले ही उसमें लाखों त्रुटियां हों ।" आशा नित्य के विपरीत मालूम नहीं क्यों मेरे इस तर्क पर शांत हो गयी ।

"कौन डॉक्टर थे ?" उसने बात के रुख़ को मोड़ना चाहा । "यही–डॉक्टर हरिश्चन्द्र ।"

"हरिश्चन्द्र ? हरिश्चन्द्र ?" उसने बल देते हुए हरिश्चन्द्र का नाम कई बार दोहराया ।" और फ़ीस भी तो 25 से कम न देनी पड़ी होगी जबकि दवाई के अलग रहे । आख़िर मुई मेहतरानी उसको कहां से अदा करेगी ?"

"आशा ! बच्चे की जान संसार की प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रिय होती है । 25 रुपया क्या 50 और 100 रुपया भी अगर डॉक्टर मांगे और बच्चे की जान बच जाने की संभावना पैदा हो जाए, तो मेहतरानी क्या इससे भी अधिक गयी गुज़री माताएं यथासामर्थ्य हरेक प्रयत्न कर देखेंगी–फिर गुजरी मेहतरानी लाख ग़रीब सही, उसके पास उसके पति का दिया हुआ चांदी का एक गहना अब भी मौजूद है जो 50 रुपये से कम का नहीं । आंखों में आंसू भरे हुए उसने जब पति की आख़िरी यादगार डॉक्टर के क़दमों पर डाल दी, तो मुझ से रहा न गया और आज ही मिले हुए वेतन में से मैंने अदा कर दिया ।

"अच्छा, यह बात है ? आशा ने तुनकते हुए कहना आरंभ किया, "गुजरी ने आप पर ख़ूब डोरे डाल रखे हैं ।" और वह क्रोधित चेहरा बनाकर पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठ गयी ।

"एक दूसरे से सहानुभूति दरसाने का सत्यानाश इस प्रकार न करो, आशा !" मैं झुंझला कर बाहर निकल गया । इसके बाद आशा पर इसकी क्या प्रतिक्रिया हुई होगी, मुझे नहीं मालूम । मैं उस दिन रात में घर देर से लौटा । सीधे कमरे में घुस गया और धड़ाम से बिस्तर पर जा गिरा कुछ देर बाद निन्द्रा ने आ दबोचा और आसपास की घटनाओं से बेख़बर मैं पड़ा सोता रहा, यहां तक कि सुबह हो गयी ।

दिन बीतते रहे, पर आशा के व्यवहार में किसी प्रकार का परिवर्तन न हुआ । मेहतरानी को देखकर उसका पारा अब भी चढ़ जाता । वह उसी तरह फटकारती और क़रीब न आने देती, पर मेहतरानी के चेहरे पर दुख व रोष के चिह्न न पहले कभी दिखायी पड़े थे, और न अब दिखायी दिये । वह पहले ही आशा को रानी जी ही कहती और आज भी रानी जी ही कहती, वह पहले जिस प्रकार समय से कमाने, नालियों को मेहनत से साफ़ करने और झाड़ू लगाने का काम करती थी, आज भी उसी तरह बल्कि उससे अच्छा ही करती । हां उसको मेरे बच्चे के प्रति प्रेम में कुछ बढ़ोत्तरी ही हो गयी थी, मालूम नहीं क्यों । कल्पना को अब घंटों प्यार करती और बहलाती, हालांकि आशा उसे उसके दुलार से दूर रहने की बार-बार हिदायत कर चुकी थी । कोमल से वह पहले से ज़्यादा ही छेड़छाड़ करती, हालांकि आशा इस पर जल-भुनकर राख हो जाती ।

"कोमल भैया ! 'अ' से 'अनार', कि 'अमरूद' ? वह प्राय: इसी वाक्य से कोमल को छेड़ती ।

"भक ? 'अ' से 'अनार', 'अमरूद' नहीं", वह ज़ोर से चिल्लाता । "और 'आ' से 'आम' कि 'आड़ू', मेहतरानी खिलखिलाकर हंसती हुई पूछती ।

उसे कोमल को इस प्रकार छेड़ने में मज़ा आता ।

"हम नहीं बताएंगे जाओ–तुम्हें इतना भी नहीं आता कि 'आ' से 'आम' होता है–'आड़ू' कैसे हो जाएगा ? बुद्धू कहीं की !!" कोमल चिड़ जाता और आंगन में रखी हुई लकड़ी को उठाकर सिर पर तान लेता–अभी तुम्हारा सिर फोड़ देंगे ।"

"अच्छा कोमल भैया ! अब नहीं कहेंगे" और वह हंसती हुई मुख को दूसरी ओर फेर लेती । कोमल लकड़ी रख देता और फिर अपने खेल में लग जाता ।

"देख ! ओ गुजरी की बच्ची ! कोमल को अब चिड़चिड़ा बनाने की कोशिश की तो ठीक न होगा ।" आशा की ग़रज़दार आवाज़ कड़कती और गुजरी की हंसी सहसा बन्द हो जाती । वह शांतिपूर्वक सीढ़ियों से उतरती हुई नीचे अपने घर में चली जाती ।

एक दिन ऑफ़िस ही के काम से मुझे नगर से दूर जाना पड़ा । अतः आशा को चंद हिदायतें करके चला गया । वापसी तो उसी दिन होने वाली थी, लेकिन शाम देर तक । आशा ने फिर भी मुझ से गुज़ारिश की कि जितना जल्द हो सके वापस आ जाऊंगा । इसलिए उसकी तरफ़ से किसी प्रकार की परेशानी की कोई बात न थी ।

निचली मंज़िल से उतरने के लिए मेरे आंगन ही से सीढ़यां जाती थीं । उसी दिन कोमल को मालूम नहीं क्या सूझा कि सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा, शायद मुझे आते-जाते देखकर उसकी भी इच्छा हुई हो । आशा कमरे में कोई काम कर रही थी । कल्पना पालने में गों-गों का स्वर करती हुई प्लास्टिक के खिलौनों से खेल रही थी । दो सीढ़ियों से उतरने के बाद जो कोमल का पांव फिसला तो 18 सीढ़ियों तक लुढ़कता हुआ वह नीचे जा पड़ा । बड़ी ज़ोर से चीख़ मारी और बेहोश हो गया । वैसे उसका पूरा शरीर तो घायल हो ही गया था, सिर के पिछले हिस्से में अत्यधिक चोट आयी थी सिर फट गया था और रक्त था कि बराबर बहा ही जा रहा था । कुछ ही मिनट में धरती ख़ून से भर गयी । कपड़े लाल हो गये यह सब कुछ हुआ, परन्तु किसी को कानों-कान ख़बर तक न हुई । उसी क्षण गुजरी मेहतरानी उधर ही से गुज़री ।

''कोमल भैया–अरे भैया ??'' और बड़ी ज़ोर से चिल्लाई ''लालू ! ओ लालू !!'' वह अपने बच्चे को बुला रही थी–''दौड़ जल्दी, रानी जी को ख़बर कर दे कि कोमल भैया गिर गये''–और लालू सीढ़ियों पर तेज़ी से चढ़ने लगा ।

''कालू ! ओ कालू !'' उसने बड़े लड़के को पुकारा–''बेटा ! डॉक्टर हरिश्चन्द्र की कोठी देखी है ना ? दौड़कर जाओ, कहो मुंह मांगी फ़ीस मिलेगी–बच्चे की हालत ख़तरनाक है–ज़िन्दगी और मौत का सवाल है ।'' कालू भी भागता हुआ बाहर निकल गया । और उसने ख़ुद कोमल को गोद में उठा लिया । अपनी एकाकी साड़ी को एक ओर से फाड़कर सिर पर पट्टी बांधी ताकि ख़ून रुक जाए । कोमल अचेत था और पता न था कि क्या होगा । चेहरा ख़ून की कमी के कारण पीला पड़ चला था । ख़ून रुक जाने के बाद उसे धीरे से उठाकर ऊपर लेकर चली ही थी कि आशा आ गयी और वस्तुस्थिति देखकर दहाड़ें मार-मारकर रोने लगी ।

''हाय भगवान ! अब क्या होगा ? मेहतरानी मेरे बच्चे को बचाओ ।'' उसने चिल्ला-चिल्लाकर पूरा घर सिर पर उठा लिया । ''रोइए नहीं रानी जी । कालू को डॉक्टर के पास भेजा है । अभी डॉक्टर आये जाते हैं ।'' गुजरी दिलासा दे रही थी ।

''नहीं मेहतरानी ! डॉक्टर को जल्दी बुलाओ ! वह बुरी तरह हांप रही थी ''मेरा बच्चा, हाय मेरा बच्चा'' उसके रोने-पीटने में वृद्धि ही होती रही । वह कोमल से लिपट गयी कोमल अब तक अचेत पड़ा था । ''हाय मेरा बच्चा'', वह चिल्लाए जा रही थी–''मेहतरानी ! अगर डॉक्टर हज़ार रुपये भी फ़ीस मांगे तो परवाह न करना । मेरे बच्चे को बचाओ ।''

''धीरज धरो रानी जी ! धीरज, अभी डॉक्टर आ ही जाते हैं । मालिक ने चाहा तो कोमल भैया अच्छे हो जाएंगे ।'' परन्तु इन सांत्वनापूर्ण बातों से आशा को न संतोष होना था, न हुआ । वह रोती रही, चिल्लाती रही, फिर भी मेहतरानी बच्चे की सेवा से तनिक भी अचेत नहीं हुई ।

'मालिक ! बच्चे पर दया कर !' उसके होंठ यही वाक्य बार-बार दोहराते रहे, यहां तक कि डॉक्टर आ गया । घावों की ड्रेसिंग की गयी, सिर में टांका लगाया गया, इंजेक्शन दिया गया और उसी समय से कोमल के दर्द में कमी शुरू हो गयी, तब कहीं आशा की जान में जान आयी ।

''मेहतरानी जाओ नहीं जब तक कि वह न आ जाएं ।'' आशा ने विनीत भाव से कहा, मेहतरानी शांत रही ।

''मेहतरानी ! अब मेरे बच्चे की जान बच जाएगी न ?''

''ज़रूर-ज़रूर, अगर मालिक ने चाहा तो कोमल भैया शीघ्र ही चंगे हो जाएंगे ।''

मैं अपने निश्चित समय पर आ गया । तमाम बातें मालूम हुईं मेहतरानी की सेवाओं ने मेरे दिल में जगह बना ली थी और मैं उसका प्रदर्शन नहीं कर पा रहा था । मेहतरानी जाने लगी, आशा ने कहा, ''तनिक रुको मेहतरानी ।''

''अब क्या है रानी जी ! बाबू जी तो आ ही गये–अब चलूं ।'' देखते ही देखते आशा ने उसके हाथ पर एक दो, दस-बीस कड़कते हुए नोट रख दिये । ज़ुबान मौन थी, पर दिल की धड़कन बता रही थी कि आशा अपनी तमाम हरकतों पर शर्मिन्दा है और वह संभवतः प्रायश्चित स्वरूप मेहतरानी पर ''सहानुभूति'' दर्शा रही है । मेहतरानी सिर झुकाए चली आ रही थी–और मेरा मन गद्‌गद् हो उठा था ।

औरंगज़ेब आलमगीर : एक नया दृष्टिकोण

■ डॉ॰ ओम प्रकाश प्रसाद

''भारतीय इतिहास-लेखन में कुछ ऐसी त्रृटियां पायी जाती हैं जिनके कारण हमें कई प्रकार के अन्तर्विरोध और अनुचित पक्षपात देखने को मिलते हैं । उदाहरणस्वरूप यदि सम्राट अशोक के बारे में केवल इतना ही लिखा जाए कि–

1. उसने सत्ता हथियाने के लिए अपने एक सौ भाइयों को जान से मार डाला था ।

2. कलिंग के युद्ध में उसने एक लाख लोगों को मरवा डाला ।

3. उसी युद्ध में उसने एक लाख पचास हज़ार लोगों को बन्दी बना लिया ।

4. वह एक कट्टर धार्मिक शासक था, क्योंकि उसने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए न केवल अपने सगे-संबंधियों को विभिन्न देशों में भेजा बल्कि सरकारी अधिकारियों को भी उसी काम में लगा दिया और इसके लिए सरकारी ख़ज़ाने का इस्तेमाल किया ।

5. उसकी धार्मिक नीति ने ब्राह्मणों को बहुत दुख पहुंचाया ।

तो कोई भी सीधा-साधा पाठक निश्चित रूप से इसी नतीजे पर पहुंचेगा कि अशोक एक अत्यधिक बुरा और अत्याचारी शासक था । भारत के इतिहास में कोई राजा, महाराजा, सुल्तान या बादशाह ऐसा नहीं मिलता जिसने अशोक की भांति इतने बड़े स्तर पर नरसंहार किया हो, शत्रुओं को बन्दी बनाया हो और अपने धर्म के लिए सरकारी ख़ज़ाने का खुलकर इस्तेमाल किया हो । परन्तु इतिहास में अशोक के बारे में अनेक अच्छे एवं कल्याणकारी कामों का उल्लेख किया गया है जिसके आधार पर उसे एक महान सम्राट कहा जाता है ।

इसी प्रकार दो महान व्यक्तियों–मुहम्मद बिन तुग़लक़ और औरंगज़ेब के बारे में हम देखते हैं कि इनके अनेक महत्वपूर्ण कामों की अनदेखी करते हुए इतिहास की किताबों में उन्हें इस तरह पेश किया गया कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक़ एक पागल शासक और बादशाह औरंगज़ेब एक



कट्टर और ज़ालिम मुस्लिम शासक के रूप में जाना जाने लगा । जबकि इन दोनों शासकों के शासनकाल में न तो अशोक के शासनकाल की भांति नरसंहार हुआ, न असंख्य शत्रुओं को बन्दी बनाया गया, न धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए सरकारी ख़ज़ाने का इस्तेमाल हुआ और न सरकारी मशीनरी और सगे-संबंधियों को इस काम में लगाया गया ।

उपर्युक्त बातों को ज़ेहन में रखते हुए इतिहासकारों के लिए यह आवश्यक है कि वह जब मुहम्मद बिन तुग़लक़ या औरंगज़ेब के बारे में लिखें तो यह सच्चाई उनके सामने रहनी चाहिए कि उनके शासनकाल में भी बहुत-से अच्छे काम हुए हैं ।

औरंगज़ेब के विरुद्ध सर्वाधिक पक्षपातपूर्ण रवैया अंग्रेज़ों के शासनकाल के इतिहासकारों ने अपनाया । इलियट और डाउसन नाम के दो अंग्रेज़ इतिहासकारों ने अपनी पुस्तकों में मुस्लिम पर्यटकों के यात्रा वृत्तांतों और मुस्लिम इतिहासकारों की लिखी हुई किताबों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया । अपने अनुवाद में इन लोगों ने विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखा कि वही बातें अंग्रेज़ी अनुवाद में आएं जिनसे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सामाजिक, राजनीतिक और विशेष रूप से धार्मिक मतभेद पैदा हैं । अंग्रेज़ों ने अपनी चतुराई के बल पर दुनिया के अधिकांश हिस्सों पर क़ब्ज़ा किया और

हमेशा ''फूट डालो और राज करो'' की नीति पर विश्वास किया । अंग्रेज़ों की इस नीति का इलियट और डाउसन की लेखनी पर गहरा प्रभाव पड़ा ।

दूसरे मुस्लिम शासकों की बात यदि यहां न भी करें और केवल औरंगज़ेब पर ध्यान दें तो भी हम देखते हैं कि उसे मुग़ल शासकों में सबसे बुरा शासक सिद्ध करने के लिए उन्होंने न केवल औरंगज़ेब के अच्छे कामों को कोई स्थान नहीं दिया, बल्कि उसकी छवि को धूमिल करने के लिए ग़लत और झूठी बातों को आधार बनाकर इतिहास के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया ।

मशहूर इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार की लिखी हुई किताबें हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में उपलब्ध हैं । यदुनाथ सरकार की किताबों में कुछ दिलचस्प बातें पढ़ने को मिलती हैं । अपनी किताब में सरकार साहब कोई ऐसा क़दम उठाने से बाज़ नहीं आते जिससे यह सिद्ध हो सके कि औरंगज़ेब अपने समय का बदतरीन शासक था । लेकिन उसी किताब में ऐसी बातें भी मिलती हैं जिन पर विचार करने से हम इस नतीजे पर पहुंच सकते हैं कि वैसा नहीं था, जैसा बताया गया है । इस सच्चाई को जानने के लिए हम सरकार साहब की किताबों में प्रकाशित औरंगज़ेब के फ़रमानों का अध्ययन कर सकते हैं ।

आशीर्वादी लाल, ईश्वरीय प्रसाद, श्रीराम शर्मा, आर॰सी॰ मजूमदार और वी॰एस॰ स्मिथ आदि इतिहासकारों ने भी मध्यकाल पर कुछ किताबें लिखी हैं । औरंगज़ेब पर लिखते समय इन इतिहासकारों ने भी न्याय से काम नहीं लिया हैं और जाने-अनजाने उन्होंने घटनाओं को इस अंदाज़ से पेश किया है कि पढ़ने वाला उनको कट्टर मुसलमान और ज़ालिम बादशाह समझे, लेकिन 1960 ई॰ के आसपास कुछ साफ़ ज़ेहन वाले इतिहासकारों की किताबें मिलती हैं, जिनमें मुस्लिम शासकों विशेषकर औरंगज़ेब की छवि को सही तौर पर पेश करने की कोशिश की गयी है । इनमें इरफ़ान हबीब, एस॰ नुरुल हसन, हरबंस मुखिया, अतहर अली और सतीश चन्द्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । इरफ़ान हबीब ने कुछ ऐसे बिन्दु उठाये जिनसे साफ़ ज़ेहन के लोगों की न केवल औरंगज़ेब के प्रति सहानुभूति हुई बल्कि यदुनाथ सरकार और दूसरे इतिहासकारों की कमज़ोरियां भी उभर कर सामने आयीं ।

हरबंस मुखिया कहते हैं कि आर॰सी॰ मजूमदार औरंगज़ेब के द्वारा तोड़े गये मंदिरों का उल्लेख तो ज़ोर-शोर से करते हैं लेकिन उन सच्चाइयों पर चुप्पी साध लेते हैं कि उसी सम्राट ने ब्राह्मणों एवं मंदिरों को दान दिया । एक ओर जहां सर यदुनाथ सरकार, इलियट, डाउसन और वी॰एस॰ स्मिथ इतिहास का अर्थ राजा-रानी, वज़ीर-दरबारी, उमरा और नाचने-गाने वालियों से लेते हैं, वहीं इरफ़ान हबीब ने इतिहास का अर्थ तकनीकी विकास, कृषि, उद्योग धंधे और व्यापार में ऐतिहासिक बदलाव को दर्शाना लिया है । सतीश चन्द्र ने एक और पहलू टैक्स वसूलने की व्यवस्था पर प्रकाश डाला है ।

रोमिला थापर ने अपनी पुस्तक ''मध्यकालीन भारत'' में मुग़ल साम्राज्य के पतन का कारण सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को बताया है । पतन का कारण औरंगज़ेब नहीं, औरंगज़ेब के उत्तराधिकारियों को कहा जा सकता है ।

विपिनचन्द्र ने अपनी एक पुस्तक में कहा है कि किसी भी दौर के उत्थान व पतन की ज़िम्मेदारी किसी एक व्यक्ति पर डालना उसी स्थिति में सच होगा जबकि इतिहास को हम राजा-रानी की कहानी मान लें ।

डॉ॰ ओम प्रकाश प्रसाद ने अपनी पुस्तक में आगे लिखा है–

शाहजहां अपना उत्तराधिकारी दारा शिकोह को बनाना

गीत

किससे क्या परिवाद करें हम, क्या भूलें ? क्या याद करें हम
जो पाया प्रारब्ध यही था, छोड़े, ख़त्म विवाद करें हम
एक दूसरे की पीड़ा का, सही-सही अनुवाद करें हम
बीता उस पर सोच-सोच क्यों, वर्तमान बरबाद करें हम
बहुत गयी, कम रही ज़िन्दगी, उसको क्यों बेस्वाद करें हम
पहले ही न उदासी कम जो, और गहन अवसाद करें हम
जीवन-संध्या में स्मृतियों के, सब पंछी आज़ाद करें हम
जो भूमिका मिली उसको ही, ठीक-ठीक निष्पाद करें हम
क्या आवश्यक फिर से जीवित, कोई प्रणय-प्रवाद करें हम
जग से बोले किन्तु कभी तो, खुद से भी संवाद करें हम
राख मानकर क्यों स्वकारे, जीवन पुण्य-प्रसाद करें हम ।

चन्द्रसेन 'विराट'
इन्दौर (म॰प्र॰)

चाहता था, इसमें सबसे बड़ी रुकावट औरंगज़ेब को समझता था । इसलिए वह किसी न किसी बहाने औरंगज़ेब को दरबार से दूर ही रखता । तरह-तरह की समस्याओं से जूझने के नतीजे में औरंगज़ेब की क्षमताओं में तेज़ी से निखार आता गया । दारा को अपना उत्तराधिकारी बनाने और सल्तनत के कामकाज से पूरी तरह अवगत कराने के लिए शाहजहां उसे अपने पास ही रखता । उन दिनों दारा शिकोह को इतना अधिकार मिला हुआ था कि वह किसी भी तरह एक बादशाह से कम नहीं था । शाहजहां से मिलने के लिए उससे अनुमति लेना अनिवार्य था । पिता के इस प्यार के कारण वह युद्ध के मामलों में अनुभव नहीं प्राप्त कर सका । सेना से उसका कोई संपर्क नहीं था ।

6 सितम्बर 1657 ई॰ को शाहजहां दिल्ली में बीमार पड़ा और 26 अक्तूबर को उसे आगरा लाया गया । अपने पिता के नाम पर दारा हुकूमत चलाता रहा । इसी दौरान औरंगज़ेब के एक विश्वसनीय मंत्री मीर जुमला को मंत्री के पद से हटा दिया गया । दारा के इस रवैये से औरंगज़ेब और उसके दो अन्य भाइयों को भी गद्दी के सिलसिले में चिंता सताने लगी ।

तभी यह ख़बर मिली कि सबसे छोटा भाई शुजा ने अपने बादशाह होने का ऐलान कर दिया है और बंगाल से दिल्ली की ओर चल पड़ा है । शुजा को रोकने के लिए शाहजहां की अनुमति से 22,000 सैनिक भेजे गये । फिर शाहजहां को ख़बर मिली कि उसका दूसरा बेटा मुराद गुजरात में ख़ुदमुख़्तारी का ऐलान करके औरंगज़ेब से मिल गया है । अतएव गुजरात से मुराद और दकन से औरंगज़ेब के हमले को रोकने के लिए दारा ने मज़बूत फ़ौजी बन्दोबस्त किये ।

उपर्युक्त घटनाओं से शाहजहां का पक्षपातपूर्ण रवैया पूरी तरह उजागर हो जाता है । एक ऐसा रवैया जो एक पिता और बादशाह के लिए कदापि उचित नहीं था । औरंगज़ेब की बेहतरीन योग्यताओं से अवगत होने के बावजूद उसने न तो दारा को और अधिक योग्य बनाने का प्रयत्न किया और न औरंगज़ेब को अपने साथ मिलाने की कोशिश की । उसने मुराद को ख़त लिखा : ''यदि वह औरंगज़ेब की हत्या कर दे तो उसे ही बादशाह बना दिया जाएगा ।''

औरंगज़ेब ने बचपन से ही जिस बहादुरी और साहस का प्रदर्शन किया था उस पर किसी भी पिता को नाज़ हो सकता था । लेकिन शाहजहां ने हमेशा उसे राजधानी से दूर रखा और अनुभवहीन, आरामतलब और बेबुनियाद बातों पर विश्वास करने वाले दारा को उत्तराधिकारी चुनने की इच्छा प्रकट की । इसी से राजनीतिक वातावरण में उथल-पुथल मची ।

यदुनाथ सरकार के अनुसार, बीजापुर की लड़ाई (14 अक्तूबर 1657 ई॰) से लेकर तख़्त हासिल करने (25 जनवरी 1658 ई॰) तक का ज़माना औरंगज़ेब ने काफ़ी परेशानियों, चिंताओं और कठिनाइयों में गुज़ारा । घटनाएं इतनी तेज़ी से घट रही थीं जिन्हें रोकना या किसी तरह टालना औरंगज़ेब के लिए संभव नहीं था । समस्याएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थीं और उसका भविष्य बिल्कुल अंधकारमय दिख रहा था । उस समय जिन छोटी-बड़ी कठिनाइयों पर उसने क़ाबू पाया वह हमें उसके धैर्य, संयम, योग्यता, चतुरता, सतर्कता और सेवा को सुव्यवस्थित रखने की और उसूलपरस्ती की प्रशंसा करने पर मजबूर करती है ।

शाहजहां की मृत्यु से पहले औरंगज़ेब ने बग़ावत न करने का फ़ैसला किया था । लेकिन तेज़ी से पेश आने वाली घटनाओं ने उसे दूसरा रास्ता अपनाने पर मजबूर कर दिया । 5 फ़रवरी 1658 को वह गद्दी हासिल करने के लिए चल पड़ा । रास्ते में दोनों भाइयों मुराद और शुजा की सेनाएं भी मिल गयी । मुग़ल सरदार जयसिंह ने औरंगज़ेब को रोकना चाहा लेकिन वह औरंगज़ेब से हार गया । शाहजहां के छह हज़ार से अधिक सैनिक मारे गये । औरंगज़ेब अब आगरा पहुंच चुका था । वहां उसका मुक़ाबला दारा के साथ हुआ । दारा हार गया । औरंगज़ेब ने इस जीत का सेहरा मुराद के सिर बांधा ।

अब शाहजहां की औरंगज़ेब खुलकर विरोध करने लगा । शाहजहां आगरा के क़िले में बन्द होकर औरंगज़ेब के ख़िलाफ़ हमला करने की तैयारी करने लगा । औरंगज़ेब ने क़िले को घेर लिया और दुश्मनों की शक्ति को कमज़ोर करने के उद्देश्य से पानी हासिल करने के संसाधन बन्द कर दिये । इसी हालत में तीन दिन गुज़र गये और आख़िरकार औरंगज़ेब की सेना क़िले में दाख़िल हो गयी । औरंगज़ेब क़िले में ख़ून की नदियां बहा सकता था, लेकिन ऐसा न करके उसने शाहजहां को महल के अन्दर क़ैद कर दिया ।

शाहज़ादी जहांआरा बहन होने के नाते औरंगज़ेब को

मनाने और उस पर अपना प्रभाव डालने के लिए उसके पास पहुंची और सल्तनत को चारों भाइयों में बांट देने का प्रस्ताव रखा, लेकिन औरंगज़ेब ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया । दूसरी ओर सलाहकारों के बहकावे में आकर मुराद औरंगज़ेब का खुला विरोध करने लगा । औरंगज़ेब ने मुराद को 233 घोड़े और 20 लाख रुपये देकर उसके सन्देह को समाप्त कर दिया, लेकिन गुप्त सुत्रों से उसे पता चला कि मुराद औरंगज़ेब को सबसे बड़ी रुकावट समझता है । अतएव औरंगज़ेब ने मुराद को बुलाकर उसके हथियार छीन लिए और उसे भी क़ैदख़ाने में डाल दिया ।

यहां हमें विचार करना चाहिए कि यदि औरंगज़ेब चाहता तो शाहजहां और मुराद दोनों की हत्या कर सकता था । इसलिए कि सारी शक्तियां अब उसी के पास थीं, लेकिन जैसा कि ऊपर बताया गया है कि वह हमेशा धैर्य, संयम और युक्ति से काम लेता था । ग्वालियर के क़िले में मुराद तीन वर्षों तक जीवित रहा और 4 दिसम्बर 1661 ई० को दो गुलामों ने उसे मार डाला ।

5 जून 1658 को दारा दिल्ली पहुंचा और औरंगज़ेब के ख़िलाफ़ दोबारा सैनिक तैयारी करने लगा । उसने लाहौर में बीस हज़ार सिपाहियों की एक सेना बनायी, लेकिन औरंगज़ेब उसका पीछा करता रहा । 23 अक्तूबर 1658 को दारा सेहवान भाग गया । जब औरंगज़ेब ने वहां भी उसका पीछा न छोड़ा तो 13 नवम्बर को ठट्ठा जा पहुंचा । 16 नवम्बर को वह गुजरात भाग गया । औरंगज़ेब ने अपनी सेनाएं वापस बुला लीं ।

एक बार फिर दारा सैनिक तैयारी करने लगा और कई मशहूर राजपूत और दूसरी ताक़तों को अपना समर्थक बना लिया । काफ़ी तैयारी के बाद दारा और औरंगज़ेब की सेनाएं टकरायीं । दारा एक बार फिर हार गया । वह वहां से भागा लेकिन एक अफ़ग़ानी सरदार ने धोखे से दारा, उसके छोटे लड़के और उसकी दोनों बेटियों को क़ैद करके औरंगज़ेब के एक पदाधिकारी बहादुर ख़ान के हवाले कर दिया ।

औरंगज़ेब ने दारा के भाग्य के फ़ैसले के लिए अपने मंत्रियों से विचार-विमर्श किया । दानिशमन्द ख़ान ने उसके जान के अमान की सिफ़ारिश की लेकिन शाइस्ता ख़ान, बहादुर ख़ान और हरम में बैठी छोटी बहन रोशन आरा ने राज्य की भलाई के लिए दारा की हत्या का समर्थन किया । उलमा ने भी दारा के क़त्ल का समर्थन किया ।

इसी दौरान शुजा ने एक और सेना बना डाली और तख़्त हासिल करने की एक और कोशिश की और इलाहाबाद तक आगे बढ़ आया । लेकिन 5 जनवरी 1659 को औरंगज़ेब की सेना ने उसे खजवा के पास हटाकर बंगाल की ओर वापस भगा दिया । 12 मई 1660 को वह अराकान में पनाह लेने पर मजबूर हो गया । वहां वह जिस बर्मी राजा की मेहमानी के सहारे वह रह रहा था उसी के ख़िलाफ़ हंगामा करने के आरोप में उसके बाल-बच्चों को मार डाला गया । कुछ लोगों के साथ वह जंगल की तरफ़ भागा जहां लोगों ने उसे मार डाला ।

उपरोक्त समस्याओं एवं कठिन परिस्थितियों से मुक़ाबला करने और सफलता हासिल करने के बाद औरंगज़ेब को गद्दी मिली । उसकी हुक्मरानी की अवधि 50 वर्ष और यदि सूबेदारी की अवधि को भी जोड़ लिया जाए तो साठ वर्ष होती है ।

(लेखक की पुस्तक 'औरंगज़ेब आलमगीर : एक नया दृष्टिकोण' से साभार)

लघुकथा

संस्कार

सर्दी शुरू होने के साथ ही रामरत्न ने अपने ठेकेदार बेटे सुनील को अपने लिए गर्म कपड़े सिलवाने को कह दिया था । रोज़ शाम को घर आने पर पूछता तो सुनील समय न मिलने का कारण बता देता था । दिमाग़ बूढ़ा हो चला था, उसके दिल में दिनों-दिन यह बात गहरी पैठ कर गयी कि सुनील को उसके कहे की परवाह ही नहीं है । वह निराश रहने लगा, उसे लगने लगा कि जो बड़े संस्कार देकर सुनील को बड़ा किया था, वे सब व्यर्थ हो गये ।

एक दिन वृद्धाश्रम वाले चंदा मांगने आये और सुनील के बारे में पूछा तो डरते हुए रामरत्न ने उसके कमरे की तरफ़ इशारा कर दिया ।

उसके आश्चर्य का तब ठिकाना न रहा जब सुनील ने सहर्ष एक लाख रुपये का चेक काट कर उन्हें दे दिया । अपने दिये बड़े संस्कारों पर उसका सीना गर्व से फूला जा रहा था और वह सर्दी के मौसम और अपने गर्म कपड़ों को भूल गया था ।

अशोक यादव
अटेली मंडी (हरि०)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो कुछ धन-सामग्री हमने तुमको प्रदान की है, उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि वह दिन आए, जिसमें न ख़रीद-बिक्री होगी, न दोस्ती काम आएगी और न सिफ़ारिश चलेगी । और ज़ालिम वास्तव में वही हैं, जो कुफ़्र की नीति अपनाते हैं ।"

(क़ुरआन, 2:254)

A Well Wisher

GOA

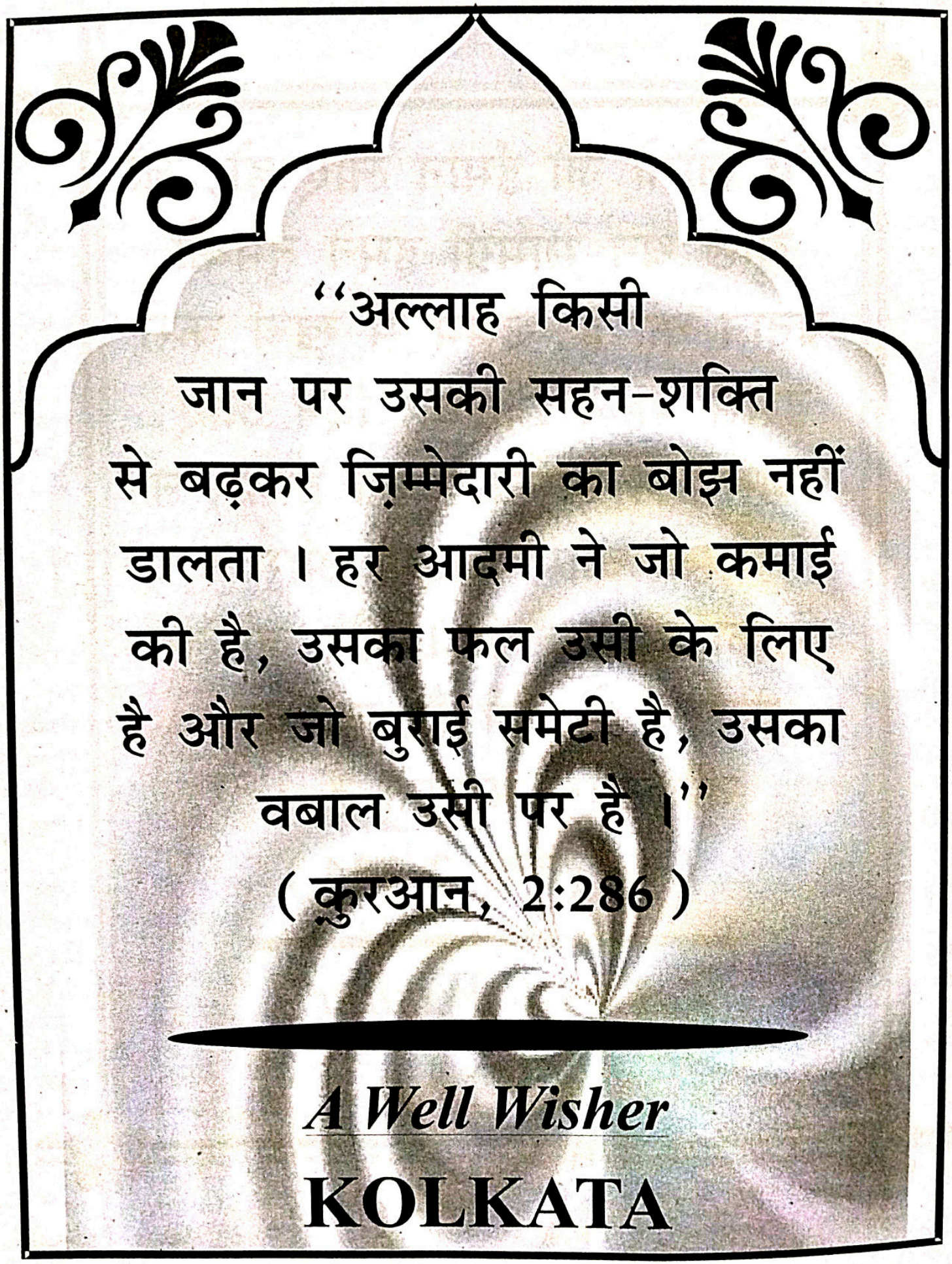
"अल्लाह किसी
जान पर उसकी सहन-शक्ति
से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं
डालता । हर आदमी ने जो कमाई
की है, उसका फल उसी के लिए
है और जो बुराई समेटी है, उसका
वबाल उसी पर है ।"
(क़ुरआन, 2:286)
A Well Wisher
KOLKATA

साक्षात्कार में शारीरिक हाव-भाव पर विशेष ध्यान दें

■ ए॰ के॰ मिश्रा



व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की सोच, अनुभूति एवं व्यवहार का दर्पण होता है । कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से ही पहचाना और दूसरे व्यक्तियों से अलग किया जाता है । कार्य करने के ढंग, विभिन्न परिस्थितियों में अभिक्रिया करने के तरीके, शारीरिक हाव-भाव आदि से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता चलता है । अपने व्यक्तित्व की वजह से ही कोई व्यक्ति महान बनता है तो कोई सामान्य व्यक्ति विख्याता होता है, तो कोई कुख्यात । आप अपने व्यक्तित्व को जिस सांचे में ढालने की कोशिश करेंगे वह वैसा ही आकार लेगा किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में सबसे पहले उसके शारीरिक हाव-भाव से पता चलता है ।

व्यक्ति की शारीरिक भाषा उसके व्यक्तित्व के विषय में बहुत कुछ बयां कर देती है । साक्षात्कार कक्ष में प्रवेश करते समय आपको कमर सीधी रखते हुए चलना चाहिए और बैठते समय उचित मुद्रा पर ध्यान देना चाहिए । एक मृदु मुस्कान के साथ उचित अभिव्यक्ति आपके व्यक्तित्व को चार चांद लगा सकती है । साक्षात्कार के दौरान आपको हंसमुख और आत्मविश्वास से लबरेज लगना चाहिए । एक अच्छा अभ्यर्थी साक्षात्कार के दौरान एकाग्र एवं दत्तचित्त रहता है और साक्षात्कार लेने वाले की बात को ध्यानपूर्वक सुनता है । एकाग्रचित से तात्पर्य है सामने वाले व्यक्ति की इच्छा और आवश्यकता के साथ तालमेल बैठाना ।

यदि कोई व्यक्ति चाहता है कि दूसरे व्यक्ति के साथ उसकी अंतक्रिया उत्पादक तथा सूचनाप्रद हो, तो उस समय सुनने की कला को विकसित करना आवश्यक हो जाता है । मौखिक तथा अमौखिक 'शारीरिक भाषा' अभिव्यक्तियां जब मिल जाती हैं, तो अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ जाती है । दूसरे शब्दों में, व्यक्ति जो कुछ बोलता है, उसके साथ उसकी शारीरिक भाषा का उचित सामंजस्य होना चाहिए । यदि अच्छा संबंध स्थापित करना है, तो उम्मीदवार को अपने विभिन्न शारीरिक हाव-भावों का अनुकूलतम उपयोग करना चाहिए ।

साक्षात्कार अथवा सामूहिक चर्चा जैसे औपचारिक अवसरों के लिए कुछ स्वीकृत मानक विकसित किये गये हैं, जिनका इन अवसरों पर अवश्य ही पालन किया जाना चाहिए, साक्षात्कार की प्रक्रिया के दौरान उम्मीदवार को अपने शारीरिक गतिविधियों 'जैसे हाथ-पैर हिलाना आदि' को जितना संभव हो सके, कम कर लेना चाहिए, हाथों को इधर-उधर हिलाना, बार-बार बैठने की स्थिति को बदलना, सिर अथवा कंधे को बार-बार इधर-उधर हिलाना, पलकों को जल्दी-जल्दी ऊपर-नीचे करना और अजीब तरह से मुंह बनाना आदि गतिविधियां साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति के मन पर अनावश्यक रूप से ग़लत प्रभाव डालती हैं ।

इसी प्रकार की कुछ अन्य गतिविधियां भी हैं, जिन पर

विशेष रूप से ध्यान दिये जाने की ज़रूरत है, जैसे दरवाज़ा खोलते अथवा बंद करते समय अनावश्यक आवाज़ करना या कुर्सी को खींचते समय चीख़ जैसी आवाज़ उत्पन्न होना । इस प्रकार की गतिविधियों से साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति पर न केवल विपरीत प्रभाव पड़ता है, बल्कि वह चिड़चिड़ापन भी महसूस करता है और उम्मीदवार के प्रति उदासीन हो सकता है ।

उम्मीदवार को सीधी अवस्था में कुर्सी पर बैठना चाहिए, परंतु एकदम जड़ होकर भी नहीं । जब उम्मीदवार को अपने बैठने की मुद्रा बदलने की इच्छा हो तो उसे ऐसे उपयुक्त समय का चयन करना चाहिए, जब उस पर किसी की नज़र न हो । अल्पावधि के साक्षात्कार के दौरान बैठने की मुद्रा बदलने के प्रयास से हमेशा परहेज़ करना चाहिए ।

बैठने की सर्वोपयुक्त मुद्रा में उम्मीदवार को अपने दोनों हाथ बांधकर मेज के नीचे रखने चाहिए, जिससे वह आरामदायक महसूस कर सके । साक्षात्कार आरंभ होते ही उम्मीदवार को सामने वाले व्यक्ति द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर देते समय इधर-उधर न देखकर सीधे उसी की तरफ़ देखना चाहिए । इससे आत्मविश्वास प्रदर्शित होता है । इधर-उधर देखने में ऐसा लगता है कि अभ्यर्थी असहज महसूस कर रहा है और अपने डर तथा बेचैनी को छुपाने का प्रयास कर रहा है ।

अपनी बात को प्रभावशाली तरीक़े से प्रस्तुत करने के लिए उम्मीदवार अपनी शारीरिक भाषा का इस्तेमाल कर सकता है । साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अभ्यर्थी बोलते हुए अपने सिर, हाथों आदि का उपयुक्त एवं प्रभावशाली तरीक़े से इस्तेमाल कर सकते हैं । इस कला में माहिर होने के लिए अभ्यर्थी नियमित रूप से प्रतिदिन समाचार वाचकों के हाव-भाव तथा मुद्राओं का अवलोकन कर सकते हैं ।

यदि आपकी शारीरिक भाषा एकदम अलग प्रकार का संकेत देती है, तो चाहे आपने कितनी भी दक्षता के साथ अपना जीवन-वृत्त तैयार क्यों न किया हो या सभी कठिन प्रश्नों का भी सही जवाब क्यों न दिया हो, साक्षात्कार की बाधा को पार करना आसान नहीं होगा । विभिन्न शोधों से ये निष्कर्ष निकाले गये हैं कि संप्रेषण के दौरान आवाज़ का लहजे और शारीरिक भाषा का 65 प्रतिशत योगदान होता है । शब्दों का योगदान मात्र 35 प्रतिशत तक होता है ।

शारीरिक भाषा से हमारी भावनाएं और सोच-विचार, काफ़ी हद तक परिलक्षित हो सकते हैं, चाहे हम कुछ बोल पा रहे हैं या नहीं । अपने कार्यकलापों के बारे में सजग न रहने से हमें घबराहट तथा बोरियत महसूस होती है और दिमाग़ में नकारात्मक विचार पैदा होने लगते हैं । इसका परिणाम घातक सिद्ध हो सकता है ।

शारीरिक भाषा से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण संकेत इस प्रकार हैं, घबराहट में इधर-उधर हाथ पैर मारना या हिलाना बेचैनी का सूचक है ।

एक अच्छा जीवन-वृत्त और साक्षात्कार में सभी कठिन प्रश्नों के सही उत्तर भी अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ पाएंगे, यदि आपकी आवाज़ स्पष्ट न हो । स्वयं को स्पष्ट, नियंत्रित एवं सतत आवाज़ में विश्वासपूर्ण तरीक़े से प्रस्तुत करना अति महत्वपूर्ण है । इसका अभ्यास करने के लिए समय लगाएं और यहां तक कि अपने मित्रों के साथ छद्म साक्षात्कार आयोजिक करें । संयमित लहजे में स्पष्ट रूप से अपनी बात कहें, आवश्यकतानुसार लहजे में परिवर्तन करें तथा एक रसता से बचें ।



प्रदूषित पानी से मानव-जीवन को ख़तरा

■ रऊफ़ आज़मी

अल्लाह तआला ने इस भूमंडल की प्रबंध-व्यवस्था को अत्यंत संतुलन के साथ इसलिए स्थापित किया है, ताकि मानव-जीवन को किसी भी तरह का ख़तरा पैदा न हो । ब्रह्माण्ड की हर चीज़ में पूर्ण संतुलन है । सूरज से ज़मीन की दूरी में अगर कमीबेशी होती, तो ज़मीन पर जीवन की कल्पना संभव न होती । ज़मीन अपनी धुरी पर 24 घंटे में एक चक्कर लगाती है । अगर यह समय 24 घंटे के बजाय 30 हो जाए, तो इतनी तेज़ हवाएं चलें कि लोगों को ईश्वरीय प्रकोप का भय सताने लगे । इसी तरह अगर यह समय घटकर 21 घंटे हो जाए, तो वनस्पतियों के लिए ख़तरा पैदा हो जाता है । जिस तरह ब्रह्माण्ड की सारी व्यवस्था में वास्तविक संतुलन है, उसी तरह पर्यावरण में भी भरपूर संतुलन है । वातावरण, हवा और पानी प्रकृति के दो अनमोल उपहार हैं । प्रदूषण से पाक हवा-पानी और स्वच्छ पर्यावरण अल्लाह तआला की बड़ी नेमत हैं ।

आश्चर्य है कि जिस हवा-पानी की पवित्रता और वातावरण की सफ़ाई पर मानव-जीवन की निर्भरता है, इन्सान इस हवा-पानी और वातावरण को प्रदूषित करके मुसीबतों को आमंत्रित करता है । इस वक़्त पर्यावरणीय प्रदूषण एक विश्वव्यापी समस्या बन चुका है । प्रदूषण के मामले को लेकर सारी दुनिया परेशान है ।

भारत ही बल्कि दुनिया के कई देशों में पानी की समस्या बनी हुई है । लोग साफ़-सुथरा पीने योग्य पानी से वंचित हैं । विशेषज्ञों के अनुसार दक्षिणी अफ़्रीक़ा का शहर केपटाउन दुनिया का पहला बड़ा शहर बन गया है, जहां से आधुनिक दौर में पीने के पानी की कमी बनी हुई है । यह वह समस्या है, जिसकी तरफ़ विशेषज्ञ एक लंबे समय से ध्यान दिला रहे थे । बज़ाहिर तो पानी दुनिया के 70 प्रतिशत भाग पर फैला हुआ है, लेकिन इसका केवल 3 प्रतिशत ही पीने के योग्य है, जो आबादी बढ़ने, प्रदूषण और दूसरे कारणों के आधार पर नाकाफ़ी साबित हो रहा है । दुनिया में कम से कम एक अरब लोग पानी की समस्या से जूझ रहे हैं और 2.7 अरब इन्सान ऐसे हैं, जिन्हें साल के कम से कम एक महीने में पानी की कमी का सामना करना पड़ता है ।

2014 ईसवी में दुनिया के पांच सौ बड़े शहरों का सर्वे किया गया, जिससे मालूम हुआ कि हर चार में से एक शहर पानी के दबाव से दो-चार है । संयुक्त राष्ट्र के अनुसार यह वह सूरतेहाल है, जब पानी की सालाना मात्रा 1700 क्यूसिक मीटर (17 लाख लीटर) प्रति व्यक्ति से कम हो जाए । (W.H.O.) वैश्विक स्वास्थ्य संस्था और संयुक्त राष्ट्र के भविष्यवाणी के अनुसार 2030 की दुनिया में ताज़ा पानी की मांग 40 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी, जिसके कारण पर्यावरणीय परिवर्तन, आबादी में वृद्धि और इन्सानी व्यवहार में बदलाव है । इस सारे सूरतेहाल में केपटाउन आइस बर्ग की चोटी की भांति है, जिसका केवल एक हिस्सा पानी से बाहर और नौ हिस्से अन्दर होते हैं । नीचे दुनिया के कुछ ऐसे मुख्य शहरों की सूरतेहाल बयान की जा रही है, जिसके बारे में अंदेशा है कि वह केपटाउन की तरह पानी के अभाव के ख़तरे से दो-चार हैं ।

भारत के बंगलौर शहर और आसपास के क्षेत्रों की झीलें बुरी तरह से प्रदूषित हो रही हैं । बंगलौर इस भारतीय शहर का टेक्नॉलोजी का केंद्र बनने के बाद वहां की आबादी में बेतहाशा वृद्धि हुई है, जिसका प्रभाव विवशतापूर्वक पानी की उपलब्धता और निकासी के प्रबंध पर पड़ा है । यह बात भी है कि शहर में पानी की सप्लाई का प्रबंध इस तरह ख़राब है कि स्थानीय हुकूमत के अनुसार आधा स्वच्छ पानी व्यर्थ चला जाता है । केवल कर्नाटक के क्षेत्र ही में नहीं, बल्कि आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, झारखंड, उत्तराखंड जैसे राज्यों में जनता साफ़-सुथरे पानी से वंचित है ।

वैश्विक स्वास्थ्य संस्था के अनुसार भारत में प्राकृतिक मौत से मरने वालों की संख्या का अनुपात बहुत कम है । हमारे देश में प्रदूषित पानी, प्रदूषित खाद्य-पदार्थों और

साफ़-सुथरा वातावरण न मिलने के कारण मरने वालों की संख्या लगभग 60 प्रतिशत है, जो कि चिंता का एक विषय है । प्रदूषित पानी और प्रदूषित भोजन के इस्तेमाल से मरने वालों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि ही होती जा रही है, वहीं पर सफ़ाई व सुथरायी न होने के कारण हज़ारों की संख्या में लोग विभिन्न बीमारियों का शिकार होकर मौत के गाल में समा रहे हैं, जिससे हमारे देश की सरकारों की कारकर्दगी पर सवालिया निशान लगे हुए हैं ।

मिस्र का 97 प्रतिशत ताज़ा पानी नील नदी से आता है । क़ाहिरा शहर के अन्दर से बहने वाली नील नदी ने वैसे तो हज़ारों सालों से सभ्यताओं को सिंचित किया है, लेकिन अब इस महान नदी को बहुत ज़्यादा दबाव बर्दाश्त करना पड़ रहा है । मिस्र नील नदी के स्वच्छ पानी का 97 प्रतिशत हिस्सा प्रदान करता है, लेकिन अब यह इन्सानी बस्तियों और औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाले गंदे पानी से प्रदूषित होता चला जा रहा है । संयुक्त राष्ट्र के अनुसार मिस्र में प्रदूषित पानी से संबंधित बीमारियों से बड़े पैमाने पर मौतें हो रही हैं और 2025 ईसवी तक वहां पानी की गंभीर कमी होने का अंदेशा है ।

रूस में पानी की कमी नहीं है, लेकिन यह पानी प्रदूषित होता जा रहा है । मास्को, रूस में सामूहिक रूप से ताज़ा पानी का बहुत बड़ा भंडार पाया जाता है, लेकिन सोवियत दौर में की जाने वाली कृषि संबंधित विस्तारण के कारण इसे भी प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है । मास्को में 70 प्रतिशत पानी ज़मीन की सतह से प्राप्त होता है, जो ज़्यादा आसानी से प्रदूषित हो जाता है । स्थानीय संस्थाएं स्वीकार करती हैं कि देश का 35 से 60 प्रतिशत पानी स्वास्थ्य-रक्षा की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता ।

लंदन में बड़े पैमाने पर पानी की बर्बादी होती है । लंदन बहुत-से लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि लंदन में भी पानी की फ़राहमी दबाव का शिकार है । आमतौर पर समझा जाता है कि वहां बहुत वर्षा होती है, लेकिन वास्तव में लंदन में वर्षा की मात्रा पेरिस और न्यूयार्क की तुलना में बहुत कम है और यहां का 80 प्रतिशत पानी नदियों से आता है । ग्रेटर लंदन अथार्टी के अनुसार 2025 तक शहर में पानी कम पड़ना शुरू हो जाएगा और यह समस्या 2040 ईसवी तक, गंभीर रूप धारण कर लेगी । लगता है कि लंदन में रबड़ के पाइपों के इस्तेमाल पर पाबंदी लगने वाली है ।

प्रदूषण के हवाले से जहां तक इस्लामी दृष्टिकोण की बात है तो वह बिल्कुल स्पष्ट है । इस्लाम साफ़-सुथरा और पवित्र धर्म है, पाकी को आधा ईमान ठहराता है । हदीसों में घरों के सेहनों तक को पाक-साफ़ रखने की ताकीद की गयी है । जल-संचयों में गंदगी फैलाकर उन्हें प्रदूषित करने से रोका गया है । इस्लाम में वृक्षारोपण की प्रेरणा दी गयी है । नबी करीम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–"जो कोई मुसलमान पेड़ लगाता है या खेती करता है और उससे कोई इन्सान, परिंदा या जानवर खाता है, तो यह लगाने वाले के लिए हिस्सा है ।" (बुख़ारी)

मशहूर इमाम औज़ाई का कथन है कि पेड़ों का काटना बहुत बड़ा गुनाह है, क्योंकि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ने किसी पेड़ को काटने विशेष रूप से फलदार और किसी इमारत को बर्बाद करने से मना किया कि आपके बाद मुसलमानों ने इस पर अमल किया । (सुनन तिरमिज़ी) पवित्र क़ुरआन साफ़ कहता है कि खुश्की व तरी में फ़साद व बिगाड़ वास्तव में इन्सान की करतूतों की वजह से आता है । क़ुरआन, ज़मीन में फ़साद पैदा करने से रोकता है, जिससे मानव-स्वास्थ्य को ख़तरा पैदा होने का डर पैदा होता हो ।

भारत के लिए यह बात बहुत ज़्यादा चिंतनीय है कि प्रदूषण के कारण सबसे ज़्यादा मृत्यु यहीं पर हुई । सिर्फ़ एक साल 2015 ई॰ में 52 लाख लोग प्रदूषण की भेंट चढ़ गये । प्रदूषण से संबंधित ब्रिटेन की स्वास्थ्य पत्रिका की हालिया रिपोर्ट भारत के लिए सोचनीय है । भारत प्रदूषण से प्रभावित होने वाले देशों की सूची में पहले नम्बर पर है । प्रदूषण से संबंधित ताज़ा रिपोर्ट भी उस वक़्त सामने आयी, जब देश में दीपावली का त्योहार मनाया जाने वाला था । पर्यावरण प्रदूषण के पेशेनज़र सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों के क्रय-विक्रय पर पाबंदी लागू की थी, इसके बावजूद दिल्ली और देश भर में पटाखे छोड़ने में कोई कमी नहीं हुई ।

स्वच्छ भारत का नारा लगाकर कुछ सांकेतिक काम कर लेने से प्रदूषण से मुक्ति संभव नहीं, बल्कि प्रदूषण से संबंधित जानकारी से जन-समुदाय को जागरूक करने की नितांत ज़रूरत है, तभी प्रदूषण से हम सुरक्षित रह सकते हैं ।

लंबी टांगों वाला पक्षी शुतुरमुर्ग़

शुतुरमुर्ग़ विश्व का सबसे बड़ा जीवित पक्षी है । इसकी अधिकतम लंबाई 2.3 मीटर और भार 155 किलोग्राम तक पाया जाता है । शुतुरमुर्ग़ अफ़्रीक़ा के मैदानों और रेगिस्तानी इलाक़ों में पाये जाते हैं । शुतुरमुर्ग़ से पहले न्यूज़ीलैंड के मायो पक्षी 3 मीटर लंबे होते थे । लेकिन दुख की बात

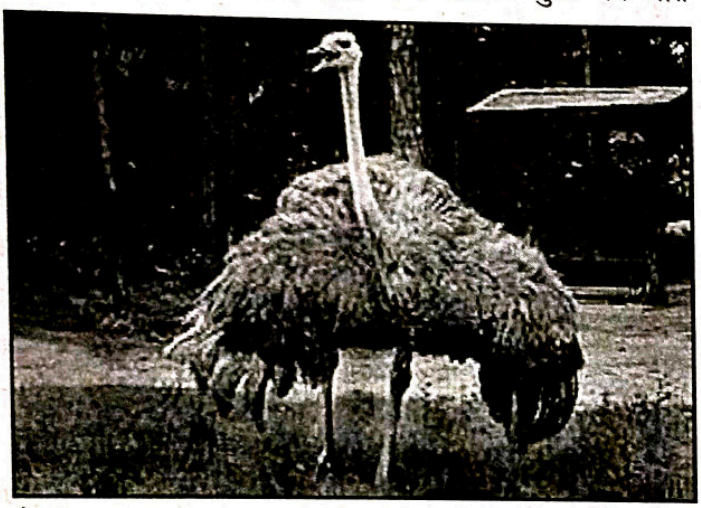

है कि अब उनका अस्तित्व प्राय: समाप्त हो गया है । यह एकमात्र ऐसा पक्षी है जिसके हर पांव में दो खुर होते हैं ।

नर शुतुरमुर्ग़ बेहद ख़ूबसूरत होता है । पांव, गर्दन और सिर को छोड़कर इसके पूरे शरीर पर घने काले पंख होते हैं । इसकी आंख पांच सेंटीमीटर तक लंबी होती है, जिसकी सहायता से यह काफ़ी अच्छी तरह से दूर-दूर तक देख़ सकता है । नर शुतुरमुर्ग़ की आवाज़ भी अलग ही होती है । जब यह बोलता है तो ऐसा लगता है कि मानो कोई शेर दहाड़ के साथ-साथ फुफकार भी रहा हो ।

हालांकि शुतुरमुर्ग़ अन्य पक्षियों की तरह उड़ नहीं सकता, लेकिन यह बहुत तेज़ भागता है । एक छलांग में 4. 5 मीटर की दूरी तय करने वाला यह पक्षी 65 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ़्तार से दौड़ सकता है । अपनी तेज़ रफ़्तार और तेज़ नज़र की बदौलत यह पक्षी शिकारियों से बचने में भी सफल हो जाता है ।

डर जाने या शिकारी के आ जाने पर यह अपना सिर रेत में घुसा लेता है, इसके बारे में प्रचलित यह कहावत सरासर ग़लत है । अगर भागते-भागते यह बहुत थक जाता है तो अपना बचाव करने के लिए अपनी मज़बूत टांगों की सहायता लेता है । इसका खुर 18 सेंटीमीटर लंबा होता है जो एक हथियार की तरह इस्तेमाल होता है ।

आमतौर पर शुतुरमुर्ग़ पेड़-पौधों को खाता है लेकिन मिल जाने पर यह छिपकलियों और कछुओं को भी खा जाता है । खाना पचाने के लिए समय-समय पर शुतुरमुर्ग़ बालू और कंकड़-पत्थरों को भी खाता रहता है । मादा शुतुरमुर्ग़ एक बार में 10 अंडे देती हैं । ये अंडे नर द्वारा रेत में बनाए घोंसलों में रखे जाते हैं । रात में नर ही अंडों को सेता है । पांच से छह सप्ताह में अंडे से शिशु निकल आते हैं । एक महीने का शिशु एक वयस्क शुतुरमुर्ग़ जितनी रफ़्तार से दौड़ सकता है ।

अनेक नामों वाला पक्षी कैनरी

पिंजड़े में पाले जाने वाले पक्षियों के रूप में बडग्रेगर यानी बजरीगर बहुत लोकप्रिय है । इसे कैनरी भी कहते हैं । यह मूल रूप से आस्ट्रेलिया का वासी है । इस पक्षी की विशेषता यह होती है कि यह स्वयं को किसी भी पर्यावरण के अनुकूल आसानी से ढाल लेता है और इन्सान की बोली की नक़ल बख़ूबी कर सकता है ।

हालांकि इसकी अनेक प्रजातियां पायी जाती हैं और यह विभिन्न रंगों का होता है लेकिन मूल बडग्रेगर पक्षी का रंग हरा ही था और उसके पंखों पर एक विशेष प्रकार के गहरे रंग के धब्बे थे । इस समय यह जिन विभिन्न रंगों में पाया

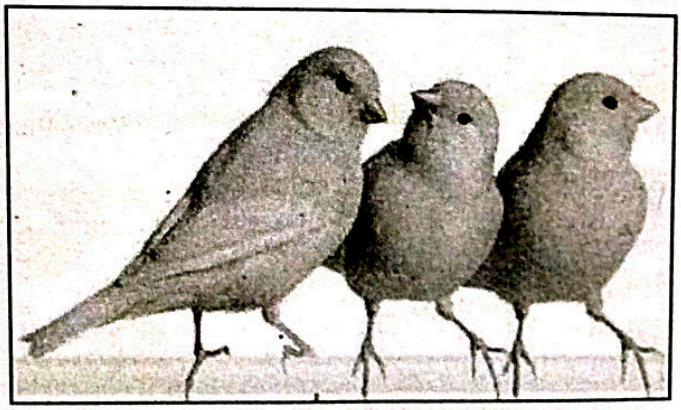

जाता है, उनमें प्रमुख हैं–हल्का हरा, गाढ़ा हरा, पीला, जैतूनी, सफ़ेद, स्लेटी, नीला, बैंगनी और जामुनी । इतना ही नहीं, इसके पंखों पर उभरने वाले निशान भी अलग-अलग रंग के होते हैं ।

आकार-प्रकार में यह पक्षी गोरैया के तरह का होता है और देखने में तोते की तरह । इसे कई स्थानीय नामों से भी जाना जाता है जैसे–जैबरा तोता, कैनरी तोता तथा शैल तोता इत्यादि । यह बहुत खिलदंड़ी प्रवृत्ति का होता है ।

मादा बडग्रेगर एक बार में प्राय: यूकलिप्टस या फिर किसी अन्य वृक्ष के सड़े तने में स्वयं सुराख बनाकर तीन से आठ अंडे तक देती है । अट्ठारह से इक्कीस दिन सेने के बाद अंडों से बच्चे निकलते हैं । क्योंकि अंडे भी एक-दो दिन के अंतराल पर दिये जाते हैं, इसलिए अंडों से बच्चे भी एक-दो दिन के अंतराल पर ही निकलते हैं ।

शिशुओं की देखभाल का काम आमतौर पर नर-मादा दोनों मिलकर ही करते हैं । जब तक शिशु डेढ़ माह के नहीं हो जाते, तब तक उनकी देखभाल और भोजन के इन्तिज़ाम का काम माता-पिता का होता है । इस पूरी अवधि में वे शिशुओं को फलों का गूदा, बीज और पौधों के कोपल खिलाते हैं । एक महीने के होने पर शिशु घोंसले से बाहर विचरण करने लगते हैं ।

बर्फ़ीली झीलों के जीव-जन्तु

ठंडे इलाक़ों में जब वातावरण का तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से कम हो जाता है, तो तालाबों, झीलों और नदियों का पानी जम जाता है फिर भी इस जमे हुए पानी में रहने वाले जीव-जन्तु मरते नहीं हैं । अब सवाल यह उठता है कि भला यह बर्फ़ में ज़िंदा कैसे रहते हैं ? दरअस्ल झीलों, तालाबों आदि में पानी की केवल ऊपरी सतह ही जमकर बर्फ़ में बदलती है, नीचे का पानी नहीं जमता है । यह द्रव



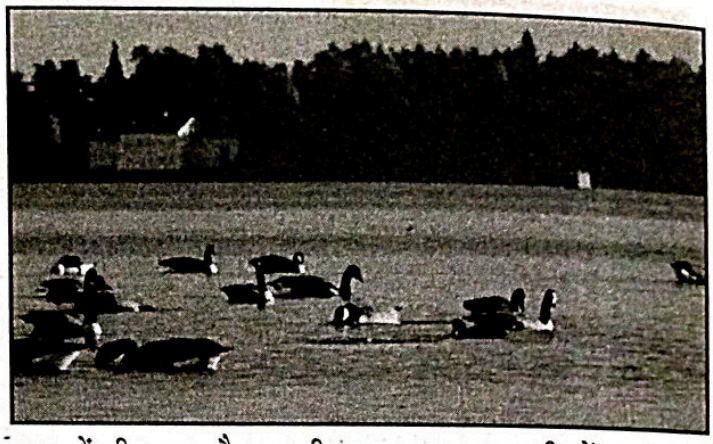

रूप में ही रहता है । सभी जन्तु इस द्रव पानी में आराम से रहते हैं और मरने से बच जाते हैं ।

जाड़े के दिनों में ठंडे इलाक़ों में जब वातावरण का तापमान गिरता है तो झीलों और तालाबों के पानी की ऊपरी सतह ठंडी होने लगती है । ऊपरी सतह का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस पहुंच जाता है तो इसका घनत्व अधिकतम हो जाता है अर्थात ऊपरी परतों का पानी भारी हो जाता है । इस भारीपन के कारण यह पानी नीचे की ओर बैठना शुरू हो जाता है और नीचे का पानी ऊपर आने लगता है । यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि समस्त जल का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस नहीं पहुंच जाता ।

जब ऊपरी पानी का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस से कम होना शुरू होता है तो इसका घनत्व कम होना शुरू हो जाता है और इस पानी का नीचे जाना बन्द हो जाता है । ठंड के कारण इसका तापमान गिरते-गिरते शून्य डिग्री सेल्सियस पहुंच जाता है और पानी की ऊपरी सतह बर्फ़ में बदल जाती है, जबकि नीचे की परतें 4 डिग्री सेल्सियस वाले पानी के रूप में ही रहती हैं । इस पानी में मछली तथा दूसरे जीव आराम से ज़िंदा रहते हैं । यदि पानी का प्रसार नियमित होता तो झीलों और तालाबों का समस्त पानी जमकर बर्फ़ में बदल जाता है और उनमें रहने वाले सभी जीव और पेड़-पौधे समाप्त हो जाते हैं ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली–110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

SHALIMAR
RESTAURANT



Special Items

CHICKEN
- Murg Mumtaz
- Chicken Malaysia
- Jalwa Kabab
- Tiranga Kabab
- Seekh Kabab
- Multani Kaban

SEA FOOD
- Fish Tandoori
- King Prawns Tandoori
- Fish Angara

VEG
- Paneer Tikka



CHICKENS KABABS
- Chicken Tandoori
- Chicken Liver Takka
- Chicken Tikka
- Murg Kohinoor
- Reshmi Kabab
- Sholay Kabab
- Pahadi Kabab
- Khazana Kabab
- Chaurangi Kabab
- Sonali Kabab

Exclusively at : Shalimar Corner, Bhendi Bazar, Mumbai-400003
E-mail : info@shalimargroup.com, www.shalimargroup.com
Tel. : 23456630/34, Fax : 23456629

Posted on 20-21 May 2018
June 2018
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.05.2018
Total pages 52 with Cover

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

इस्लाम का संदेश

इस्लाम एक सिद्धान्त,एक आन्दोलन	मरयम जमीला	80.00
इस्लाम का आरम्भ	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
इस्लाम का परिचय	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां	10.00
इस्लाम का नैतिक दृष्टिकाण	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	14.00
इस्लाम का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	14.00
इस्लाम की गोद में	मुहम्मद असद (नव-मुस्लि पूर्व लियोपोल्ड)	60.00
इस्लाम की जीवन–व्यवस्था	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था और दहेज प्रथा	प्रो० उमर हयात ख़ां ग़ौरी	20.00
इस्लाम की बुनियादी बातें	मौलाना अब्दुल हई	12.00
इस्लाम की बुनियादी तालीम (खुतबात मुकम्मल)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	110.00
इस्लाम की शीतल छाया	मौलाना सय्यद हामिद अली	12.00
इस्लाम के चारों ओर	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	14.00
इस्लाम क्यां है?	मुहम्मद फारूक ख़ां	8.00
इस्लाम दर्शन	डॉ० गणेशदत सारस्वत	45.00
इस्लाम धर्म	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	60.00
इस्लाम भविष्य की आशा	सय्यद कुत्ब	24.00
इस्लाम मानवधिकारों का रक्षक	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	50.00
इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	100.00
इस्लाम में उदारता	मतीन तारिक बाग़पती	40.00
इस्लाम में पाकी और सफ़ाई	नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazl Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Mob: 7290092401 E-mail:info@mmipublishers.net
mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net